तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास

बच्चे, भगवान के प्रतिबिम्ब माने जाते हैं। अनाथ बच्चों को सम्मानपूर्वक आश्रय देने के लिए, मानवतावादी दृष्टि के साथ, १९४३ में, तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् ने श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास को स्थापित किया। जिन बच्चों ने अपने माँ-बाप खो दिये, आर्थिक विपन्नता के कारण जो माँ-बाप अपने बच्चों का दायित्व लेने में असमर्थ हैं, ऐसे बच्चों की रक्षा के लिए यह संस्था अपना हाथ बढ़ाती है। पढ़ाई के उपरांत उनको सभ्य समाज में सकुशल भेजती है। अबोध एवं व्यथित बच्चों को समुज्जवल भविष्य प्रदान करने के लिए करुणार्द्र हृदयी दाता वसुधैव कुटुम्बकम् के बल पर श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर को दान दें और भाग्यप्रदाता कलियुग दैव का अनुग्रह प्राप्त करें।

दाताओं को अनुभाग 80(G) के आधार पर आयकर की छूट मिलती है

माँग ड्राफ़्ट/चेक भेजने का पताः

मुख्य गणांकाधिकारी

ति.ति.दे, प्रशासनिक भवन

के.टी.रोड, तिरुपति - 517501

फ़ोन नंः 0877-2264249

अतिरिक्त समाचार के लिए इससे संपर्क कीजिएः

0877-2233333, 2264258

वेबसाईट: www.tirumala.org

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर प्राणदान न्यास

हृदय, वृक्क, मस्तिष्क आदि कायांगों में जान लेवा व्याधि से पीडित निर्धन रोगियों को मुफ्त में चिकित्सा करने के लक्ष्य के साथ तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् ने 'श्री वेंकटेश्वर प्राण दान न्यास (ट्रस्ट)' की स्थापना की। 'श्री वेंकटेश्वर प्राणदान न्यास' के लिए स्वेच्छापूर्वक दान दीजिए।

भारत के आयकर विभाग के अनुभाग 80(G)/35, (i), (ii) के अनुसार दाता को आयकर से छूट मिलती है।

माँग ड्राफ़्ट/चेक को निम्न पते पर भेजेंः

मुख्य गणांकाधिकारी

ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन

के.टी.रोड, तिरुपति - 517501

फ़ोन : 0877-2264249

अतिरिक्त समाचार के लिए, इनको फ़ोन करें

0877-2277777, 0877-2264258

वेबसाईट : www.tirumala.org

‘तिरुमल क्षेत्र दर्शिनी’ ग्रंथमाला

श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के उत्सव

(उत्सव देवता श्रीवेङ्कटेश्वर)

हिन्दी अनुवाद

डॉ. एम. आर. राजेश्वरी

तेलुगु मूल

जूलकंटि बालसुब्रह्मण्यं

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2017

SRI VENKATESWARA SWAMY KE UTSAV
(UTSAV DEVATHA SRI VENKATESWAR)

Hindi Translation
Dr. M. R. Rajeswari

Telugu Original
Julakanti Bala Subrahmanyam

T.T.D. Religious Publications Series No. 1249
©All Rights Reserved

First Edition - 2017

Copies : 500

Published by
Sri Anil Kumar Singhal, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Publications Division,
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

पुरोवाक्

''वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन ।
वेङ्कटेशसमो देवो न भूतो न भविष्यति'' ।।

वेङ्कटाद्रि का समुतल्य क्षेत्र इस ब्रह्माण्ड़ में कोई दूसरा नहीं है । वेङ्कटेश्वर स्वामी का समकक्षी देवता इससे पूर्व कभी नहीं हुआ था और भविष्य में नहीं होगा।

कलियुग वैकुंठ जैसा प्रकाशमान श्रीवेङ्कटाद्रि पर अखिलांड कोटि ब्रह्माण्ड नायक, श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी, अवतार ग्रहण करके प्रतिदिन भक्तों को दर्शन देते हुए अनुग्रहीत कर रहा है । एक पल के लिए ही सही, श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के दिव्यमंगल मूर्ति का दर्शन करने के लिए बहुतेरे भक्त सहस्रों की संख्या में इस क्षेत्र की यात्रा करने के लिए आते रहते हैं ।

बुलाने के तुरंत बाद साक्षात्कार देनेवाला, वरप्रदाता श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी जिस पहाड़ पर विराजमान है, उस पर भासमान स्वामी के दिव्यमंगल मूर्ति का, स्वामि पुष्करिणी का, पावन तीर्थों का, स्वामी को समर्पित नित्य कैंकर्यों का, स्वामी के ब्रह्मोत्सव आदि की विशेषताओं की विस्तृत जानकारी भक्तों तक पहुँचाने के लिए तिरुमल तिरुपति देवस्थानं ने 'तिरुमल क्षेत्र दर्शिनी' नामक ग्रंथमाला को प्रारंभ करके विद्वज्जनों से ग्रंथों का प्रणयन करवाने का बीड़ा उठाया है ।

इस ग्रंथमाला में श्री जूलकंटि बालसुब्रह्मण्यं जी द्वारा प्रणीत 'श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामि उत्सवालु', (उत्सवाल देवुडु वेङ्कटेश्वरुडु) ग्रंथ आप पाठकगण के सामने प्रस्तुत है । तेलुगु मूल इस ग्रंथ को डॉ. एम. आर.

राजेश्वरी ने हिन्दी में अनुवाद किया । आशा करते हैं कि पाठक लोग इस ग्रंथ को पढ़कर श्रीहरि के उत्सवों की जानकारी प्राप्त करके स्वामी के कृपाकटाक्ष के वशी बनेंगे ।

सदा श्रीहरि की सेवा में

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्,
तिरुपति

विषय सूची

पुरोवाक्
श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के उत्सव
अद्भुत है यह पहाड़
विचित्र नामावली (दिव्य नाम)
एडुकोण्डलु (सप्ताचल)
शेषाचल
वेङ्कटाचल
नारायणाचल
गरुड़ाचल
वृषाचल
वृषभाचल
अंजनाचल
विचित्र भंगिमा (मुद्रा)
सुधि भुला देने वाले आभूषण
स्वादिष्ट मिष्ठान्न (नैवेद्य)
विचित्र मनौतियाँ
आनंदप्रद लीलायें
पंचबेर (पाँच मूर्तियाँ)
मनोह्लादकारी उत्सव
नित्योत्सव
वारोत्सव (सप्ताहोत्सव)

पक्षोत्सव
मासोत्सव (नक्षत्रोत्सव)
संवत्सरोत्सव (वार्षिकोत्सव)
समर्पण

* * *

''श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के उत्सव''

(उत्सव देवता श्रीवेङ्कटेश्वर)

शेषाचले यन्माहात्म्य मन्यक्षेत्रे न तत् क्वचित्
तत्गतश्रीनिवासस्य महिमा नान्यगः शुभः

शेषाचल विश्व में कीर्ति प्राप्त पुण्यक्षेत्र है । इस क्षेत्र की महिमा अद्वितीय है । इस क्षेत्र में जो महिमा व्याप्त है, वह किसी अन्य क्षेत्र में नहीं है । उसी भांति इस दिव्य क्षेत्र में प्रतिष्ठित परमपावन वेङ्कटेश्वर जैसा महिमान्वित देवता अन्यत्र कहीं विद्यमान नहीं है । इसीलिये वेद ग्रंथ इस स्वामी की स्तुति ऐसा करते हैं - ''यो असि, सो असि'' अर्थात् ''जो तुम बनकर हो, वही तुम हो''- यानी, तुम अतुलनीय हो । सभी युगों में, सर्वकाल सर्वावस्थाओं में श्रीनिवास की स्तुति इस प्रकार हो रही है ।

ऐसा अद्भुत देवता कहाँ से पधारा ? क्यों उद्भूत हुआ ? कब अवतरित हुआ ? जिस पर्वत पर वह प्रतिष्ठित है, वह अचल कितना महिमामय है ? स्वामी की भाँति, उस पर्वत की भी उतनी विशेषतायें हैं क्या ? महिमायें हैं क्या ? अगर हों, तो कितने ! कौन - से ! कितने प्रकार के ! किसको बोध है ? बोध केवल तिरुमलेश को होगा ! अस्तु ! अस्तु !!

वैकुंठम् वा परित्यक्ष्ये न भक्तांस्त्यक्तुमुत्सहे
मेऽतिप्रिया हि मद्भक्ता इति संकल्पवानसि ।।

मैं, श्रीवैंकुण्ठ को भी छोड़ सकता हूँ, लेकिन अपने भक्तों को एक पल के लिये भी छोड़कर नहीं रह सकता - इस दृढ़ संकल्प से साक्षात् श्रीमन्नारायण, श्रीवैकुंण्ठ को त्यागकर इस प्रसू पर उतर आया है । इस

पृथ्वी पर, इस वेङ्कटाचल क्षेत्र में ''श्रीवेङ्कटेश्वर'' नाम से वक्षःस्थल - लक्ष्मी समेत अद्भुत स्वयंभू शालग्राममूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित होकर भक्तों को दिव्य दर्शन देकर अनुग्रहीत कर रहा है ।

''कलौ वेङ्कटनायकः'' इस यश के साथ, यह कहते हुए कि इस कलियुग के प्राणिकोटि का त्राता ''मैं हूँ, अकेला मैं ही हूँ'', तिरुमल में स्थापित इस देवता के दर्शन से अपने को कृतार्थ करने के लिये दिन - रात यात्रीगण तिरुमल की पुण्य यात्रा कर ही रहे हैं ।

निरंतर, निर्विराम, इतने सारे भक्तों को अपनी ओर इस प्रकार आकृष्ट करनेवाला यह पर्वत विचित्र पर्वत है ! अद्भुत पर्वत ! कई महिमाओं, कई लीलाओं से प्रसूत पर्वत है ! इस पर्वत पर विद्यमान, छोटे - बडे पत्थर, शिलायें, चोटियाँ मात्र पत्थर नहीं हैं । वे पत्थर जैसे दिखाई देते हैं । वास्तव में, वे सभी अनंत महिमासंपन्न चिन्तामणियाँ हैं ! रत्नों की राशियाँ हैं ! उस भगवान के प्रतीकात्मक शालग्राम शिलायें हैं ! इक्का - दुक्का नहीं, पूरा अचल शालग्रामों से भरा है ! अरे नहीं! नहीं ! पर्वत ही स्वयमेव शालग्राम है ! इतना ही नहीं ! अन्यान्य पुराण स्पष्टतया यह कह रहे हैं कि उस पर्वत पर विद्यमान श्रीनिवास भगवान, साक्षात् शालग्राम मूर्ति के रूप में स्वयंभू बनकर आविर्भूत हुआ है ।

इसी कारणवश भगवान के नंदक खड्ग के अंश से पैदा हुआ ताल्लपाक अन्नमाचार्य, बिना पादुकों के, खाली पैरों से पहाड़ चढ़े थे । उससे और बहुत पूर्व भगवद्रामानुजार्य जी ने शालग्राममय इस तिरुमल पर्वत को साक्षात् भगवान मानकर, घुटनों के बल पर चढ़े थे । इतिहास प्रसिद्ध कथन है कि रामानुजाचार्य जी के बाद मध्व संप्रदाय के प्रवर्तक व्यास जी ने भी इस पर्वत को घुटनों के बल पर चढ़े थे ।

भूलोक वैकुंठ माने जाने वाले इस पर्वत की महिमाओं की संख्या निर्धारित करना दुःसाध्य है । इस पर्वत को चढ़ेंगे तो हमारे असंख्य दोष धुल जायेंगे । उसे छुएँगे तो हमसे जितने भूल हुए, वे सभी अनगिनत पाप नष्ट हो जाते हैं । इस पर्वत की बहती ठंडी हवा जब छूती है, तब शरीर के अनेक रोग एवं भयंकर कर्मरोग नष्ट हो जाते हैं ।

इस पहाड़ पर कलकल बहती नदियाँ, पहाड़ों से गिरनेवाली झरनें, पुष्करिणियाँ (अनेक पवित्र जलकुंड) और उनके पावन जल की असीम महिमाओं का वर्णन करना किसी के बस की बात ही नहीं है ।

बहुत समय पहले, ब्रह्मादि देवतागण ने, कुमारस्वामी, अंजनादेवी, श्रीरामचंद्र, लक्ष्मण, सप्तर्षि, तुम्बुर, नारद, पंच पांडव, आल्वार, ताल्लपाक अन्नमाचार्य, कन्नड़ प्रांत के हरिदास, मातृश्री तरिगोंड वेंगमाम्बा जैसे अनेकानेक महानुभावों ने, परमयोगी पुरुष, मुनि, परम भक्त आदि ने अपने अपने युगों में, अपने - अपने जीवनकाल में, इन पर्वत श्रेणियों में भ्रमण किया था । उन्होंने अपनी मनपसंद पद्धति में, अपनी इच्छानुसार तपस्या की थी तथा पवित्र स्नान करके बालाजी का यशोगान किया । कुछेकों ने संगीत को माध्यम बनाया, अन्यों ने याग किया और इस प्रकार अन्यान्य विधाओं से साधना करके पुण्यात्मा हुए, पवित्रात्मायें बनें । इन साधकों ने न केवल स्वयं को पुण्यात्मा बनाया, प्रत्युत अनेकों को पावन बनाया और बना भी रहे हैं । वेङ्कटाचल क्षेत्र की अनंत महिमाओं का कीर्तिगान इन महानुभावों ने अनेक पद्धतियों से किया ।

ऐसी महिमासंपन्न पर्वत की जानकारी के लिये उसका क्षेत्र वैभव, श्रीवारि (बालाजी) का नाम वैभव, दिव्य मंगल शालग्राम मूर्ति का वैभव, अर्चना का वैभव, उत्सव का वैभव..... आदि उदाहरण बनते हैं ।

अद्भुत है यह पहाड़

वेङ्कटाचल क्षेत्र अद्भुत पहाड़ है । आश्चर्यचकित कर देने वाला, अचंभा बना देनेवाला पहाड़ है । अन्नमाचार्य जी ने अपने पदों में उस क्षेत्र का प्रत्यक्ष दर्शन शब्दों के माध्यम से निम्नांकित रूप से कराया है -

कट्टेदुर वैकुंठमु काणाचइन कोण्ड!
तेट्टेलाय महिमले तिरुमल कोण्ड !

वेदमुले शिललै वेलसिन दी कोण्ड !
ये देस पुण्यरासुले येरुलैनदी कोण्ड !
गादिलि ब्रह्मादिलोकमुल कोनल कोण्ड !
श्रीदेवुडुंडेटि शेषाद्रि ई कोण्ड !!

निर्माण करूँगा वैकुंठ समान निवास स्थान
महिमाओं की राशियों की ढ़ेर बनी तिरुमल पहाड़
वेद समस्त शिलायें बनकर यह पर्वत सा बना
कितनी पुण्यराशियाँ नदियाँ बनकर प्रवाहमान हैं
प्रेमपूरित बह्मादि लोकों का अग्रणी है यह पर्वत
श्रीदेव जहाँ ठहरे, शेषाद्रि वही पर्वत

अन्नमाचार्य के पुत्र पेद तिरुमलय्या ने भी इस क्षेत्र की दिव्य महिमा वैभव का परम् अद्भुत वर्णन किया.....

कोण्डा ! चूतमु रारो ! कोण्डोक तिरुमल कोण्डा !
कोण्डनि यडिगिन वरमुलोसगु मा कोण्डल तिम्मयकोण्डा !

इदिये क्षीराम्बुधि यनुचु मरि इदिये द्वारक यनुचु
इदिये नंदव्रज मनुचुनु मरि इदि दा नयोध्या यनुचू

इदिये वैकुंठम् बनुचुनु इदि परतत्वम्बनुचु
इदिये परमपदम् बनुचु वेदमुल येन्नगगल मा कोण्ड़ा !

पर्वत ! आइये देखें ! पर्वत तिरुमल पर्वत !
पर्वत से पूछने पर वर देता, हमारा पर्वत तिम्मय पर्वत !

इसी को क्षीर सागर मानकर, इसी को द्वारका मानकर
इसी को नंद का व्रज मानकर, इसी को अयोध्या मानकर
इसी को वैकुंठ बताकर, इसी को परतत्व बताकर
इसी को परमपद (चरण) बताकर वेदों के समसंख्यक हमारा पर्वत!

विचित्र नामावली (दिव्य नाम)

श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के नाम अनेक हैं, असंख्य हैं । ये सभी दिव्य नाम क्या उसी स्वामी के हैं ? इस प्रश्न का सही उत्तर कोई दे भी नहीं सकता । लेकिन एक बात तो सही है । भक्त गण अत्यंत प्रेम व इच्छा के साथ अपने इष्टदैव का दिव्य नामस्मरण सदा करते रहते हैं । भगवान भी प्रत्येक नामावली से प्रसन्न होकर अनुग्रह प्रदान कर रहा है । सभी नाम विचित्र हैं, अद्भुत हैं । आश्चर्य के साथ आनंद भी प्रदान करनेवाले प्रतीत होते हैं ।

आर्त भक्तगण ''एडु कोण्डलवाडा !'' कहकर बुलंदी आवाज में पुकारते हैं । शेषाचलम्, वेङ्कटाचलम्, नारायणाचलम्, गरुडाचलम्, वृषाचलम्, वृषभाचलम्, अंजनाचलम्, इन सप्त अचलों में प्रतिष्ठित होने के कारण, एडु कोण्डलु (सप्ताचल) नाम से पुकारा जा रहा है । ''एडुकोण्डलवाडा''! कहकर उसे पुकारने पर, ''सप्ताचल मेरे ही हैं, मैं ही इनका अधिपति हूँ'' ऐसा मानकर भगवान भाव विभोर होकर, अति

प्रसन्न होकर भक्तों को अनुग्रहीत करता है । इन सप्त पर्वतों का नामकरण कैसे हुआ, किन भक्तों के कारण हुआ, इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे, आइये ।

(एडुकोण्डलु) - सप्ताचल

सप्ताचल कहाँ है ? उनके नाम क्या हैं ? उनका नामकरण कैसे हुआ ? सप्ताचल कहीं और नहीं, बल्कि इन तिरुमल की श्रेणियों से उद्भूत पर्वत शिखर ही सप्ताचल है । शेषाचलम्, वेङ्कटाचलम् नारायणाचलम्, गरुड़ाचलम्, वृषाचलम्, वृषभाचलम्, अंजनाचलम् - यही इन पहाड़ों के नाम हैं ये नाम अत्यंत सुंदर हैं । इनका नामकरण कैसे हुआ ? इसका अब पता लगायेंगे -

शेषाचल

बहुत समय पूर्व, सहस्र फ़णधारी आदिशेष और वायुदेव के बीच स्पर्धा उत्पन्न हुई । बातें बढ़ - बढ़कर अंतिम परिणति में दोनों अपने आपको ''मैं श्रेष्ठ हूँ'' मान लिया और बाद में विवाद के रूप में ''मैं तुमसे श्रेष्ठ हूँ'' कहते अपनी - अपनी श्रेष्ठता मुखरित करने लगे । परिणामस्वरूप आवेग में आकर आदिशेष ने इस प्रकार कहा - ''अगर तुम मुझसे श्रेष्ठ हो तो मुझे जरा हिलाकर तो देखो ।'' ऐसा कहते हुए आदिशेष ने श्रीवैकुण्ठ के श्रीमहाविष्णु के क्रीडाचल पर्वत को आवृत कर लिया । बस ! इस चुनौती का उत्तर वायुदेव ने अपनी सारी शक्ति को एकत्रित करके, उस पर्वत और पर्वत को आवृत्त करनेवाले आदिशेष को 'फूँ' कहकर फूँका । उसके फ़लस्वरूप पर्वत सहित आदिशेष इस प्रसू पर आ गिर पडा । अपने इस अपमान को शेषनाग

सह नहीं पाया और कुंठित हुआ । श्रीमन्नारायण ने आदिशेष को प्रेमपूर्वक स्पर्श करते हुए कहा - 'हे शेषनाग ! तुम लेश मात्र भी चिन्ता मत कर । मैं तुम्हें अपनी बाहुओं का आभूषण बनाकर, 'नागाभरणा' के रूप में दर्शन दूँगा । इतना ही नहीं, आज से यह पर्वत तुम्हारे नाम से 'शेषाचल' के रूप में प्रसिद्धि पायेगी ।

'मैं भी 'शेषाचलपति' के रूप में भक्तों से कहलवाऊँगा' - ऐसा कहते हुए स्वामी ने शेषनाग को सांत्वना दी । शेषनाग भी तृप्त हुए । उस दिन से यह 'शेषाचलम्' 'शेषाद्रि' के रूप में भासित है । यही पहला पर्वत है ।

वेङ्कटाचल

दूसरा पर्वत 'वेङ्कटाचलम्' है । 'वेम्' का अर्थ 'समस्त पापों' का, 'कटः' भस्म करने वाला, अर्थात् वेङ्कटाचलम् का अर्थ समस्त पापों को भस्म करनेवाला है । भयंकर दावानल में थोड़ी सी रुई, गिरने से पहले जिस भांति उसके ताप मात्र से जलकर भस्म होकर बिखर जाता है, उसी प्रकार इस पर्वत को छूने मात्र से समस्त पाप धुल जाते हैं । इसलिए वह वेङ्कटः है और वेङ्कटाचलम् है । इतना ही नहीं -

'वेङ्कारोऽमृतबीजस्तु कटमैश्वर्य मुच्यते
अमृतैश्वर्यसंघत्वात् वेङ्कटाद्रिरिति स्मृतः'

वेङ्कटाचल पुराण में उसके बारे में ऐसा कहा गया - वें = माने अमृत तत्व को, कटः = ऐश्वर्य, इस प्रकार दोनों लौकिक संपदा और पारलैकिक मोक्ष को प्रदान करने वाला है वह पहाड़ ! इसीलिये इसका नाम 'वेङ्कटकोण्ड' (वेङ्कटाचलम्) पड़ा ।

नारायणाचल

तीसरा पहाड़ 'नारायणाचलम्' है, वही है 'नारायणाद्रि !' किसी समय पूर्व, 'नारायण' नाम का भक्त पूरे देश का संचार करते - करते, अंत में वेङ्कटाचल क्षेत्र पहुँचा। उन पहाड़ों, घाटियों में घूमते - घूमते, उसके प्राकृतिक सौंदर्य से आकृष्ट हुआ। वहाँ के झरनों को देखकर प्रसन्न हुआ। पर्वतों में कलकल बहती जल प्रवाहों में स्नान करके पुलकित हो उठा।

उस पर्वत पर स्थित जलकुण्ड में वह स्नान करता था। मुख्यतया 'स्वामि पुष्करिणी' तीर्थ के पावन जल में नहाकर, आनंदनिलय के वेङ्कटाचलपति और उस स्वामी के वक्षःस्थल में स्थित 'व्यूहलक्ष्मी' नाम से पुकारी जाने वाली महालक्ष्मी की विशुद्ध उपासना करता था। चंद समय के बाद जब श्रीनिवास का साक्षात्कार हुआ, तब नारायण ने वर माँगा - ''हे स्वामी ! वेङ्कटपति ! मेरे नाम से इस पर्वत को यानी 'नारायणाद्रि' के रूप में यश मिलना है। इतना ही नहीं, तुम इस पर्वत पर प्रत्यक्षदैव बनकर भक्तों को दर्शन देकर उनकी रक्षा करते रहो ! यही मेरी प्रार्थना है।'' तत्क्षण, वेङ्कटेश्वर स्वामी ने 'तथास्तु !' कहकर नारायण को मोक्ष प्रदान किया। उस समय से यह 'नारायणाद्रि' नाम से पुकारा जा रहा है।

गरुडाचल

सप्तपहाड़ों में 'गरुडाचलम्' चौथा पहाड़ है। यही 'गरुड़ाद्रि' है।

''परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम् धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे', कहकर श्रीमहाविष्णु, अन्यान्य युगों में अवतरित होकर दुष्टों का संहार करके, साधु यानी शिष्टों की रक्षा करता है।

एकदा समये, हिरण्याक्ष नामक राक्षस समस्त लोकों को अनेकानेक रूपों में हिंसा पहुँचा रहा था। परम् साधुओं को कष्ट पहुँचाया। इस राक्षस की हिंसाओं को सह न पाकर, सभी लोगों ने अपनी रक्षा करने के लिये श्रीहरि से प्रार्थना की।

हिरण्याक्ष चुप नहीं हुआ। उसने पूरे भूमण्डल को वृत्त के रूप में बनाकर, पाताल में ले जाकर, उसे लात मारते, खेलने लगा। तत्काल, भूदेवी ने वैकुण्ठ पति की प्रार्थना की। बस, वैकुण्ठवासी साक्षत् श्रीमहाविष्णु भयंकर नुकीले दांतों वाले श्वेत वराह के रूप में अवतरित होकर हिरण्याक्ष का संहार किया। उन्हीं दाँतो के बल पर भूमण्डल की रक्षा करके उसका उद्धार किया।

उस महान कार्य के कारण ब्रह्म, समस्त देवतागण, किन्नर, गंधर्व, महर्षियों, योगियों ने हर्ष प्रकट करते हुए आदिवराह स्वामी की अनेक विधाओं से स्तुति की। उनका यशोगान किया। इतना ही नहीं, ब्रह्मादि देवताओं ने उस भगवान की अन्यान्य विधाओं से प्रार्थना करते हुए यह कहा कि जिस आदिवराह के रूप में तुमने भूदेवी की रक्षा की, उसी रूप में तुम भूमण्डल पर स्थापित होकर भक्तों को दर्शन देकर उन पर कटाक्ष करो।

उनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवान ने वर प्रदान करते हुए कहा कि मैं इसी रूप में पृथ्वी पर स्थापित रहूँगा। उन्होंने तुरंत बगल में खड़े गरुड़ को आज्ञा देते हुए कहा - ''हे गरुड़ ! तुम वैकुण्ठ में जाओ। मैं ने श्री महालक्ष्मी के साथ जिस क्रीड़ाद्रि पर्वत पर भ्रमण करते हुए क्रीड़ाएँ की थी, उस पर्वत को और वहाँ के 'क्रीड़ावापी' नामक जलकुण्ड़ को यहाँ ले आकर स्थापित करो।''

तुरंत ही गरुड भगवान ने ''आज्ञा शिरोधार्य है प्रभू'' कहकर अपने परों को पसार कर उडते हुए वैकुण्ठ पहुँचे और वहाँ के क्रीड़ावापी सहित क्रीड़ाद्रि को ले आकर इस भूलोक पर स्थापित कर दिया । वही 'गरुड़ाद्रि' है । साक्षात् गरुड़ द्वारा प्रतिष्ठित होने के कारण यह पर्वत 'गरुड़ाचलम्' नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

वृषाचल

सप्ताचल में पाँचवा पर्वत 'वृषाचलम्' है । वृषा का अर्थ है 'धर्म !' किसी जमाने में धर्म देवता ने तिरुमलेश के लिये कठोर तपस्या की थी । तपस्या किस लिये किया, पता है ? धर्म देवता ने यह माँगते हुए तपस्या की, कि हे भगवान, मुझे निष्पक्ष होकर धर्म का निर्वाह करने की शक्ति दो और उसके द्वारा मेरी अभिवृद्धि कर लेने दो । श्रीनिवास भगवान ने 'शुभम् !' (तेरा शुभ हो) कहकर धर्म देवता को अनुग्रहीत किया । इस प्रकार धर्म देवता यानी वृषाधिपति के द्वारा इस दिव्य क्षेत्र में तपस्या करने के कारण यह 'वृषाचल' नामधारी हुआ । यही 'वृषाद्रि' है ।

वृषभाचल

छटवाँ पर्वत वृषभाचलम् है । 'वृषभाचलम्' इस नामकरण के नेपथ्य में एक अद्भुत कहानी प्रचलित है ।

एकदा समय में वृषभासुर नामक एक राक्षस था । वह परम शिव भक्त था । जितना भक्त था, उतना ही दुष्ट और क्रूर भी था । भक्तों की मिन्नतों के कारण उस दुष्ट के संहार के लिये श्रीहरि ने किरात का वेश धारण किया । दोनों के बीच भीषण युद्ध हुआ । अंत में श्रीनिवास

भगवान ने उस दुष्ट पर सुदर्शन चक्रायुध का प्रयोग किया । यह जानकर कि सुदर्शन चक्र महायुध से उसकी मृत्यु अनिवार्य है, वृषभ राक्षस ने श्रीनिवास भगवान के पादपद्मों को साष्टांग नमस्कार करते हुए मिन्नत माँगी - ''स्वामी ! हे श्रीनिवास ! संपूर्णत : मुझे क्षमा करो स्वामी! तुम्हारे हाथों के सुदर्शन चक्र से मारे जाना, मैं अपने पूर्व जन्म का अच्छा फ़ल मानूँगा । मेरी आखरी इच्छा की पूर्ति करने वाले तुम पर्वताकार जैसे करुणामूर्ति हो, दयातरंग हो, ऐसा कहते हुए, उसने भगवान की अनेकों रीतियों में प्रार्थना करते हुए अपनी इच्छा प्रकट की - ''स्वामी! हे श्रीनिवास ! यह देखो, इस पर्वत पर मैंने भ्रमण किया, इसलिये इसका नाम वृषभाचल हो । इसके साथ तुम इस पर्वत पर चिर-स्थायी-रूप धारण करके 'वृषभाद्रि पति' नाम के साथ भक्त कोटि की रक्षा करो ।'' श्रीनिवास प्रभु ने 'तथास्तु' कहकर उसका संहार किया । तब से, उस दिन से यह पर्वत 'वृषभाचलम्' हुआ ।

वृषभाचलम् नाम संबंधी एक और अच्छा स्थलपुराण, रोमांचक इतिवृत्त भी है । कालांतर में, किसी समय में घटित एक दिव्य गाथा है ।

इस पर्वत के तुम्बुर तीर्थ में कभी किसी समय में वृषभासुर नामक राक्षस रहा करता था । राक्षस होने के बावजूद वह नरसिंह स्वामी का अनंत भक्त था । परम भक्त होने पर भी वह अत्यंत क्रूर था । उसकी नजरों में जो मुनि, योगी, स्त्रियाँ, मनुष्य पड जाते, उनका पीछा करते, हिंसा पहुँचाते हुए, मार डालता था । उसके निकृष्ट, दुष्कर्मों को सह न पाकर सभी ने अनेक रीतियों से श्रीनिवास भगवान की इस प्रकार प्रार्थना एवं स्तुति की - 'हे महाप्रभू ! उसके चंगुल से हमें छुड़ाओ और हमारी रक्षा करो।'

वृषभासुर कितना ही क्रूर क्यों न हों, लेकिन आराधना के समय परमसात्विक बनकर रहता था। हर दिन श्रीनृसिंह स्वामी का याग करता था। याग के अंत में, पूर्णाहुति के लिये अपना सिर काटकर समर्पित करता था। लेकिन विचित्र बात यह है कि उसके धड़ पर फ़िर से उसका सिर उगता था। एक ओर उसके याग - यज्ञ और दूसरी ओर उसके दुष्कर्म दोनों हद पार कर गये।

भक्त गणों के प्रार्थनानुसार श्रीनिवास भगवान ने एक दिन उस दुष्ट के सामने पत्यक्ष दर्शन दिया। भगवान के प्रत्यक्ष स्वरूप को देखकर विस्मय से उभरकर, वह एक वर माँगने लगा - ''स्वामी ! हे श्रीनिवास प्रभू ! तुम 'वर प्रदाता' हो न ! मुझे एक वर प्रदान करो। मेरे साथ तुम युद्ध करो। इस इच्छा की तुम्हें पूर्ति करना होगा।'' यह कहते हुए हाथ उठाकर नमस्कार किया।

वेङ्कटेश्वर भगवान ने उसके साथ युद्ध किया। भीषण युद्ध की अंतिम परिणति में श्रीनिवास ने अपने चक्रायुध का प्रयोग करके उसका सिर खण्डित करने को ही था, इतने में वृषभासुर ने कहा - 'हे स्वामी ! अंत में मेरी एक इच्छा है। यह पर्वत मेरे नाम पर प्रसिद्धि पाये ! इसके साथ तुमको भी उसी नाम से पुकारने का वर दो', कहते हुए सुदर्शनचक्र को अपनी बलि चढ़ा दी।

इस प्रकार वह पर्वत 'वृषभाचलम्', 'वृषभाद्रि' नाम से पुकारा जा रहा है। उस पर्वत पर विराजमान श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान, उस समय से 'वृषभाचलपति', 'वृषभादीश्वर' के रूप में अन्यान्य युगों में भक्तों में स्मृति का चिह्न बन गया।

अंजनाचल

'अंजनाचलम्' सातवाँ पहाड है। इस नामकरण के नेपथ्य में एक अद्भुत गाथा सुनाई पडती है। यह त्रेतायुग से संबंधित आश्चर्यजनक गाथा है।

एकदा समय में 'केसरी' नाम का वानर राजा था। उसकी पत्नी अंजनादेवी थी। लम्बे समय तक निस्संतानवती होने के कारण, 'मतंगमुनि' के पास जाकर उसने अपना दुखड़ा प्रकट किया। मतंग मुनि ने बहुत सोचकर अंत में अंजनादेवी को संतान प्राप्ति का एक मार्ग सुझाया - ''माँ जी ! पम्पा नदी की उत्तर दिशा में ५०० (पांच सौ) यो जन (माप) की दूरी पर नृसिंहस्वामी का क्षेत्र है। उसके दक्षिण में 'नारायणगिरि' नामक महिमान्वित दिव्य क्षेत्र है। उस प्रदेश में एक दिव्य - भव्य जलकुण्ड़ है जो सकल पापहारिणी है। वह 'स्वामी पुष्करिणी' कहलाती है। उस पुष्करिणी के उत्तर की दिशा में एक कोश दूरी पर 'आकाशगंगा' नामक एक पवित्र - पुण्यतीर्थ भी है। प्रतिदिन उसमें नहाकर तुम बारह वर्षों के लिये तपस्या करती रहो। तुम्हें निश्चित ही संतान पैदा होगी। गुणवान, श्रेष्ठ, अनंत बलशाली, सभी लोकों में पूजनीय पुत्र तुम्हें पैदा होगा'', कहते हुए मतंग मुनि ने आशीर्वचन देकर उसे भेजा।

मतंग मुनि के आदेशानुसार वेङ्कटाचल क्षेत्र पहुँचकर अंजनादेवी ने 'स्वामि पुष्करिणी' में स्नान किया। उस पुष्करिणी के कूल पर स्थित अश्वर्थ वृक्ष की प्रदक्षिणा करके उसके निकट स्थित आदिवराह स्वामी का दर्शन किया। बाद में 'आकाशगंगा' तीर्थ पर जाकर एक वर्ष के लिये उपवास रखकर व्रत किया। उसके बाद वायुदेव प्रतिदिन एक

दिव्य फ़ल अंजनादेवी के हाथों में रखता था और उसे प्रसाद के रूप में वह स्वीकार कर तपस्या कायम रखती थी । इस तपस्या के कारण उसके समस्त पाप धुल गये । एक तेजोमय शक्ति ने उन्हें आवृत्त किया । एक दिन वायुदेव ने अंजनादेवी को अपने वीर्य से युक्त एक फ़ल दिया । अंजनादेवी ने यथाक्रम हर दिन की भांति उसे प्रसाद रूपी फ़ल मानकर खाया, वह गर्भवती हुई । दस महीनों के बाद उसे एक पुत्र पैदा हुआ । वही 'आंजनेय', 'हनुमान', 'वायुपुत्र', नामों से जग में प्रसिद्ध हुआ । आंजनेय के जन्म होने के कारण 'अंजनाचलम्' के नाम से, 'अंजनाद्रि' के नाम से इस पहाड़ का नामकरण हुआ । उसी प्रकार श्रीनिवास भगवान को 'अंजनाद्रीश्वर' नाम भी सार्थक हुआ ।

इस प्रकार तिरुमल क्षेत्र के लिये सात नाम प्रसिद्ध हुए । इसीलिए भगवान भी 'सप्तगिरीश', 'सप्ताचलवासी', 'सप्ताचलाधीश' कहे जाते हैं ।

क्या आप यह मान रहे हैं कि इन पर्वत शिखरों की गिनती केवल सात ही हैं ?

क्या इस तिरुमल पहाड़ के सात ही नाम दिये गये हैं? ये सात नाम केवल प्रसिद्ध पहाडों के नाम ही हैं । विविध युगों में घटित दिव्य गाथाओं के अनुसार भक्तगण अत्यंत प्रीति के साथ इन सातों का नामोच्चारण करते हैं । अनादिकाल से इस पर्वत क्षेत्र के नाम कितने ही थे और कितने ही नामों से पुकारा जा रहा है, यह सब किसको ही पता है ?

गगन के तारों की गिनती हो सकती है ! समुद्र के पानी के बिन्दुओं की भी गिनती हो सकती है ! इस प्रसू के मिट्टी के कणों की गिनती भी संभव हो सकती है, लेकिन इस सघन तिरुमल पहाड़ के नामों की,

उसकी महिमाओं की, उस पर विराजमान श्रीनिवास प्रभू की लीलाओं की गिनती असंभव ही है । फ़िर भी, उस अनंत में से जितने नाम मालूम हैं, जितना समाचार हमें मिलता है, उनकी जानकारी लेंगे । बहुत समय पूर्व, एक दिवस, ब्रह्मादि देवता सभी मिलकर भूलोक वैकुंठ जो वेङ्कटाचल है, उस पर पधारे । उस क्षेत्र में, श्रीदेवी समेत श्रीनिवास भगवान लीलामानुष शिलामूर्ति के रूप में भ्रमण कर रहे थे । कभी किसी समय को दयान्तरंग वेङ्कटाचलपति किन्हीं भक्त योगियों को, किन्हीं परममुनियों को, देवताओं को दर्शन देता था और बाकी समय अदृश्य हो जाता था । किसी दिव्य समय को जब ब्रह्मादि देवताओं ने इस भगवान का दर्शन किया, तब उन्होंने अन्यान्य विधाओं से भगवान की स्तुति की ।

'स्वामी ! भविष्य में कलियुग का आगमन हो रहा है न ! कलियुग के मनुष्य अशक्त होते हैं न ! अल्प आयु के भी होंगे न ! उस कम जीवन - काल में भी उनकी काम-वांछा अधिक होती है ! इसलिये कलियुग के भक्तगणों के रक्षणार्थ, अद्भुत शालग्राम मूर्ति के रूप में दर्शन का भाग्य दो । कलियुग के भक्तों के कष्टों को तारो । आर्त लोगों का उद्धार करो स्वामी !' ऐसा कहते हुए अनेक विधाओं से उस भगवान की प्रार्थना की ।

'तथास्तु !' कहकर श्रीमहाविष्णु, श्रीदेवी - भूदेवी समेत 'श्रीवेङ्कटेश्वर' नाम से, भक्तवरद बनकर, प्रार्थना के तुरंत साक्षात्कार देनेवाले 'कलौ वेङ्कटनायकः' के रूप में, सम्मान के साथ इस पर्वत पर विराजमान हुए।

उस समय से केवल सप्त पहाड़ों के नाम से ही नहीं बल्कि, अपने - अपने समय में अनुकूल यशप्राप्त नामों से यह दिव्यक्षेत्र अन्यान्य नामों से पुकारा गया है ।

अगर हमें सम्पदा चाहिए, ऐश्वर्य चाहिए, तो इस इच्छा के साथ उसकी सेवा करेंगे, तब यह पहाड़ चिन्तामणि की भांति समस्त ऐश्वर्य को प्रदान कर देता है । इसीलिये 'चिन्तामणि पर्वत' के नाम से भी यह प्रसिद्ध हुआ ।

कुछेक भक्त नश्वर ऐश्वर्य को ठुकराकर शाश्वत एवं संपूर्ण ज्ञान को प्राप्त करने की इच्छा से साधना करते हैं । बस, उनको उतना ही ज्ञान प्रदान कर देता है । इसीलिये वह 'ज्ञानाद्रि' हुआ । यही 'ज्ञानाचलम्' है, इतना ही नहीं .....

इस सप्ताचल की श्रेणियों में अनेक तीर्थ विद्यमान हैं । उनकी संख्या अनगिनत हैं और इनकी गिनती केवल भगवान ही निर्धारित कर पाता है । ये तीर्थ भी साधारण जलकुंड नहीं हैं ! कहा जाता है कि किन्हीं तीर्थों में स्नान करने मात्र से समस्त पाप धुल जाते हैं ! कुछेक के दर्शन मात्र से इष्टार्थ की सिद्धि होती है ! कुछेक तीर्थ ऐसे हैं जिसका स्मरण दूर स्थित जगहों से करने पर भी उनमें स्नान करने का फ़ल साथ ही साथ मनोवांछित वर मिल जाता है ! तिरुमल पर ऐसे अद्भुत एवं विस्मयकारी तीर्थों का विद्यमान होने के कारण अनादि समय से यह पर्वत 'तीर्थाद्रि', 'तीर्थाचलम्', नाम से भी पुकारा जा रहा है ।

इस दिव्य क्षेत्र में अनेकानेक पुष्करिणियाँ भी विद्यमान हैं । ये सभी परमपावन बनकर भक्तों के लिए सर्व पापहारिणी की भांति भासित हैं । इसके कारण ही यह पहाड़ 'पुष्कराद्रि', 'पुष्कराचलम्' और 'पुष्करशैल' आदि नामों से पुकारा जा रहा है ।

इसका एक और नाम 'वैकुंठाद्रि' है । 'गरुड़' ने श्रीनिवास भगवान के आज्ञानुसार साक्षात् श्री वैकुंठ को इस प्रसू पर स्थापित किया । इसलिए यह 'वैकुंठाद्रि' बना ! यही 'वैकुंठाचलम्' है ।

किसी एक युग में यह दिव्यक्षेत्र 'आदिवराहक्षेत्र', 'श्वेतवराहक्षेत्र', नामों से प्रसिद्ध हुआ था । इस प्रकार के नामकरण के अनेक कारण हैं -

हिरण्याक्ष के द्वारा कष्ट झेलनेवाले भूलोकवासी तथा भूदेवी को बचाने के लिए श्री महाविष्णु ने भयंकर श्वेतवराह का रूप धारण किया । उस भयंकर वातावरण को जरा शांत करते हुए आदि वराहस्वामी ने अपने नुकीले दाँतों से हिरण्याक्ष का वध कर ड़ाला और उन्हीं दाँतों से भूदेवी का उद्धार भी किया । उसी प्रदेश में भूदेवी के साथ आदिवराह के रूप में भगवान वहाँ स्थापित हो गये । इसीलिये इस पहाड़ ने 'आदिवराहक्षेत्र' के रूप में, उस स्वामी के श्वेत वर्ण होने के कारण 'श्वेतवराह क्षेत्र' के रूप में, भूदेवी के साथ विराजमान होने के कारण 'श्रीभूवराहक्षेत्र' आदि अनेक नामों से यश पाया । कभी किसी समय में, 'नील' (तेलुगु में नीलुडु) नामक भक्त ने इस पर्वत पर तपोसाधना की और सिद्धि भी प्राप्त की । उसने मोक्ष भी प्राप्त किया । उस महान तपस्वी के नाम पर यह पहाड़ 'नीलाद्रि' कहलवा रहा है । यही 'नीलाचलम्' है ।

श्रीनिवास भगवान ने अपनी देवेरियों के साथ क्रीड़ा करते हुए इस पहाड़ पर विहार किया था, इसलिये यह स्थान 'क्रीड़ाद्रि' बना । यही 'क्रीड़ाचलम्' है ।

वक्षःस्थल श्रीमहालक्ष्मी समेत 'श्रीनिवास' नामांकित होकर, 'आनंदनिलय' रूपी स्वर्ण शिखरों से युक्त अद्भुत मंजिल में विराजमान होकर, आनंदमय स्वरूपी बनकर दर्शन प्रदान करने के कारण, यह

पहाड़ 'आनंदाचलम्' के रूप में, श्रीमहालक्ष्मी के संग समस्त संपदाओं को अनुग्रहीत करके श्रीनिवास इस दिव्य क्षेत्र में विहार करते हैं और इसलिये यह पहाड़ 'श्रीशैलम्' के रूप में, अनेकानेक नामों से इस तिरुमल पहाड़ ने यश को प्राप्त किया ।

बहूनि चास्य नामानि कल्पभेदाद्भवन्ति हि
यावदुक्ता भगवतः कल्याणगुणराशयः
तावन्तोऽस्य गिरेस्संति गुणाः परमपावनाः
अस्य वेङ्कटशैलस्य माहात्म्यम् यावदस्ति हि
तावद्वक्तुम् च कार्स्न्येन न समर्थश्चतुर्मुखः
षड्मुखश्च सहस्रास्यः फ़णी देवाः परेकमु ?

अखिलाण्ड कोटि ब्रह्माण्ड़ नायक, तिरुमल परंधाम के कल्याणगुण परंपरा कितने हैं, यह किसे ही मालूम होगा ? इस क्षेत्र के नाम, कल्प भेदों के अनुसार महिमान्वित होकर, असंख्य गुणों से युक्त होकर भासित हो रहे हैं । श्रेष्ठ, व महिमा मंडित इस वेङ्कटाचल पर्वत के बारे में, अनगिनत एवं असंख्य नामावलियों का विवरण प्रस्तुत करने के लिये चतुर्मुखी ब्रह्म से, षट्मुखवाले कुमार स्वामी से, सहस्र फण वाले आदिशेष से या किसी भी देवता समूह से यह संभव नहीं होगा ।

वेङ्कटपति

तेलुगु भाषा में बालाजी को 'अडुगडुगु दण्ड़ालवाडु' कहकर पुकारते हैं । इस भाषा में 'अडुगु' का अर्थ 'चरण या पग' है, यानी भक्तगण परवशता के साथ उस स्वामी को पहाड़ चढ़ते समय, रास्ता मोलते समय पग-पग पर नमन प्रस्तुत करते हैं । उस भगवान के प्रति भक्तों में कितनी ही भक्ति भाव है, यह उसके नाम से जाना जा सकता है । ऐसे

आपद्बांधव को, सप्ताचलाधीश को कुछ भक्त लोग 'वेङ्कटपति !' नाम से भावुक होकर पुकारते हैं ।

वें = पाप, कटः = काटनेवाले स्वामी, इसलिये नाम वेङ्कटपति है। इतना ही नहीं, वें = अमृततत्व या मोक्ष, कट = प्रदाता, यानी इस भगवान के द्वारा दो कार्य संपन्न होते हैं - एक पापों को काटना, दूसरा - मोक्ष प्रदान करना, इसलिये इन दोनों कार्यों के कारण, सार्थक नाम से पुकारे जाने वाले इस स्वामी का वास्तविक नाम क्या है ? किसको पता ?

श्रीनिवास

कुछ भक्तगण स्वामी ! 'श्रीनिवास !' कहकर बड़े प्रेम से पुकारते हैं । लेकिन यह बड़ा विचित्र नाम है, चकित कर देनेवाला भी है, क्यों - कि अपना कोई निज नाम न रहने के कारण, अपनी पत्नी के नाम से पुकारे जानेवाला है सघन श्रीनिवास !

'श्री' का अर्थ है 'लक्ष्मीदेवी ।' श्रीमहालक्ष्मी को अपने वक्षःस्थल में, यानी हृदय पर गौरव के साथ प्रतिष्ठित करके संभालनेवाले स्वामी । इसीलिये श्रीनिवास बने । यह नाम अच्छा है । लक्ष्मीदेवी उनके वक्ष पर कैसे दिखाई देती है ? क्या करती है ? इसका उत्तर है -

ईशानाम् जगतोऽस्य वेङ्कटपते र्विष्णोः पराम् प्रेयसीम्
तद्वक्षःस्थलनित्यवासरसिकाम् त क्षांतिसंवर्धिनीम्
पद्मालंकृत पाणि पल्लवयुगाम् पद्मासनस्थाम् श्रियम्
वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलाम् भगवतीम् वन्दे जगन्मातरम्

वेङ्कटेश्वर भगवान के वक्ष पर 'व्यूहलक्ष्मी' के नाम से प्रतिष्ठित होकर, वक्ष पर आगे की ओर उभरी हुई रहती है वह लोकमाता ! ''द्विभुजा व्यूहलक्ष्मी'' नामांकित यह जननी स्वामी जी के वक्ष पर दो भुजाओं, दो हाथों में पद्मों (कमल के फूलों) को धारण किये पद्मासन धर कर रहती है श्रीमहालक्ष्मी ! 'वात्सल्यादि गुणोज्ज्वलाम्' का अर्थ - जिस भांति गाय, अपने बछड़े को जन्म देने के तुरंत बाद, अपनी जीभ से उसे चाटकर साफ़ करती है, उसी तरह वह लोकजननी भी भक्तों के पापों को दूर कर, सारे दोषों को केवल मिटाती ही नहीं, प्रत्युत स्वामीजी से वर भी दिलवाती है । उतना ही नहीं,

श्रीवत्सवक्षसम् श्रीशम् श्रीलोलम् श्रीकरग्रहम्
श्रीमन्तम् श्रीनिधिम् श्रीड्यम् श्रीनिवासम् भजेऽनिशम्

वह भगवान अपने वक्षःस्थल पर 'श्रीवत्सम्' नामक निशान लगाये रखा है । वह देवदेव साक्षात् लक्ष्मीपति है ! वह स्वामी, लक्ष्मीदेवी के साथ विलासों में मस्त रहता है । लक्ष्मीदेवी का हाथ ग्रहण करने वाला भी वही है ! तिरुमलेश स्वामी सकल विद्यापारंगत है ! समस्त ऐश्वर्य संपूर्णा भी है । वह निरंतर वक्षःस्थल लक्ष्मी यानी व्यूहलक्ष्मी के द्वारा स्मृत्य रहता है, स्तुत्य रहता है, इसीलिए तिरुमल स्वामी 'श्रीनिवास' के नाम से पुकारा जा रहा है ।

इतने सारे नामों से पुकारे जानेवाले वेङ्कटेश्वर स्वामी से पूछने पर कि - 'स्वामी ! तुम्हारा असली नाम क्या है ?' तो वह उत्तर देता है - 'मेरे नाम से तुम्हारा क्या संबंध ? मेरा वास्तविक नाम कुछ भी हो, तुम्हारा क्या संबंध? तुम जिस नाम से पुकारते हो, मैं जवाब दे रहा हूँ, तुम्हारी हर मांग की पूर्ति कर रहा हूँ ना ! तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति मैं कर रहा हूँ न !' इन अद्भुत उपनामों से पुकारा जानेवाला स्वामी

वेङ्कटेश्वर है ! इसीलिये को ! कहकर पुकारने पर ओ ! कहते हुए उत्तर देकर वह स्वामी प्रत्यक्ष दैव के रूप में इन पहाड़ों एवं घाटियों में भासित हो रहा है !!

विचित्र भंगिमा (मुद्रा)

हमने जान लिया कि वेङ्कटाचलम् एक अद्भुत पहाड़ है । हमने यह भी जाना कि उस पर विराजमान वेङ्कटेश्वर के नाम भी अद्भुत ही हैं । अब उस पहाड़ के 'आनंदनिलय' रूपी सुवर्ण मंजिल में विचित्र भंगिमा (मुद्रा) में खड़े श्रीनिवास द्वारा दर्शन देने की रीति, पद्धति भी परम विचित्र ! विस्मयकारी ! आनंद दायक है !! आइए देखें -

भवाब्धितारम् कटिवर्तिहस्तम्
स्वर्णाम्बरम् रत्नकिरीटकुण्डलम्
आलम्बिसूत्रोत्तम माल्यभूषितम्
नमाम्यहं वेङ्कटशैलनायकम्

इस रूप में स्तुत्य स्वामी, ऊपर दाहिने, बायें हाथों में शंख - चक्र, निम्न भाग के दाहिने हाथ को वरद हस्त मुद्रा में कर, अपने पदयुग्म (दोनों चरणों) को दिखा रहा है । अपने बायें हाथ को कटि पर रखकर, घुटनों को दिखा रहा है । इस विचित्र मुद्रा में ऐसा जान पड़ता है मानों स्वामी स्वयं संकेत करके यह कह रहे हों कि जहाँ मैं खडा हूँ, यही साक्षात् वैकुंठ है ! मेरे इन चरणों के शरण में आओ ! जो भक्त 'अन्यथा शरणम् नास्ति त्वमेव शरणम् मम' कहकर मेरे चरणों में शरण पाता है, उनका मैं उद्धार करूँगा । स्वामी लोगों से कहते हैं -

'संसारसागरसमुत्तरणैकसेतो'

'मैं सेतु/पुल बनकर, संसार रूपी समुद्र की थाह को तुम्हारे घुटनों तक ही करके आसानी से पार कराऊँगा ।' अपने वरदहस्त को दिखाते

हुए मात्र पार कराना ही नहीं, बल्कि 'आपकी इच्छाओं को वर के रूप में प्रदान करूँगा'- ऐसा कहते हुए, एक मनमोहक 'भंगिमा'/मुद्रा में खडे हैं ।

विचित्र, बनावटी मुद्रा में खडे उस स्वामीजी को आश्चर्यपूर्वक देखते हुए एक अज्ञातकवि ने ऐसा प्रश्न किया -

कुडिहस्तम् बिटु चूपुचंद मिदि वैकुंठम्बने यंदमो
जडधिव्रात परीत भूभवन रक्षा दक्षिणंबैन नी
यडुगुल् चूडुमनेवो, काक योक योय्यारम्बो ? संदेहमै
यडिगे नानति यिम्मु वेङ्कटनगाध्यक्षा ! जगद्रक्षका !!

उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ है -

जिस शांत रीति से तुम अपने दाहिने हाथ से अपने पाद पद्मों को दिखा रहे हो, वह मानो वैकुंठ के सौंदर्य को प्रकट कर रहा हो, या जिस भू पर 'जन्म लेकर, संसार रूपी सागर को पार करने के लिए (जो असाध्यकर्म है), अपने दाहिने हाथ से अपने पादपद्मों को देखने के लिये कहकर यह बताना चाह रहे हो कि शरणागति ही आपकी रक्षा करेगी, एक ऐसी शंका मेरे मन में उत्पन्न हुआ है, इसका समाधान तुम ही बताओ हे ! वेङ्कटपर्वत के अध्यक्ष, जगद्रक्षक !!

स्वामी जी की भंगिमा, उस अज्ञात महाभक्त के संदेह का उत्तर मुखरित/प्रकट करके, भगवान के भक्तों के प्रति वात्सल्य का भाव प्रस्फुटित कर रही है ।

सुधि भुला देनेवाले आभूषण

श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के नाम विचित्र हैं । मद्रा भी विचित्र है ! जो आभूषण स्वामी के अलंकरण के लिये पहनाये जाते हैं, वे भी विचित्र

ही हैं । वेङ्कटेश्वर स्वामी की सघन मूर्ति के चरणों से लेकर सिर तक अलंकृत किये जानेवाले कई दिव्याभरण, मणियों के हार, भक्तों को आश्चर्यचकित करते रहते हैं । विस्मय कर देते हैं । वे झिलमिलाते हुए नयनानंद भी प्रदान करते हैं ।

मोहन राग (कर्नाटक संगीत का राग)

चूड जूड माणिक्यालु चुक्कलवले नुन्नवि
ईडुलेनि कन्नुलवे इनचंद्रुलु ।।

कंटि गंटि वाडे वाडे घनमैन मुत्याल
कंटमाल लवे पदकमुलु नवे
मिन्टि पोडवैनट्टि मिन्चु किरीटम् बदे
जन्टल वेलुगु शंखचक्रा लवे

मोक्कु मोक्कु वाडे वाडे मुंदरने उन्नाडु
चेक्कुलवे नगवुतो जिगिमोमदे
पुक्किट लोकमु लवे भुजकीर्तुलुनु नवे
चक्कनम्म अलमेलु जवरालदे

मुंगैमुरालुनु नवे मोलकठारुनु नदे
बंगारुनिग्गुलवन्ने पच्चबट्टदे
इंगित मेरिगि वेङ्कटेशुडिदे कन्नुलकु
मुंगिटि निधानमैन मूलभूतमदे ।।

बार-बार देखने पर माणिक्य नक्षत्र समान लग रहे हैं
आयुविहीन नेत्र जैसे सूर्य चंद्र

देखा - देखा वही वही सघन मोतियों का
कंठ मालायें वहीं पदक भी वही

ऊर्ध्वलोकों की ऊँचाई से बढ़कर मुकुट वही
युगल देदीप्य शंख - चक्र वही
नमन करो - नमन करो उसे जो सामने विद्यमान है
नक्षत्र रूपी स्मिति के साथ देदीप्य वही मुखड़ा

अन्य समस्त लोक वही, भुजकीर्तियाँ भी वही
सुंदरी अलमेलु सुपुण्यवती वही
हाथों के आभूषण कटिबंध वही
स्वर्ण कांतियों से विभूषित हरितवस्त्र वही

विवेकपूर्वक जानकर कि वेङ्कटेश्वर इन चक्षुओं के लिये
पिछलाहाता की संपदा वही मूलकल्पवृक्ष

स्वामी जी, चरणों से लेकर माथा तक जितने आभूषणों से अलंकृत हैं, उनका वर्णन अन्नमाचार्य जी ने उपर्युक्त पद में दिखाया है।

पद्मपीठ, स्वर्ण चरण कवच, स्वर्ण पीताम्बर, स्वर्ण खड्ग कहे जानेवाला सूर्यकठारी, वज्रों से जडित सूर्यकठारी नामक खड्ग, वैकुंठहस्त, वरदहस्त (स्वर्ण कवच एवं वज्रों से जडित कवच) दोनों हाथों के सुवर्ण कवच । दोनों हाथों में नागाभरण, वक्षःस्थल में स्थित देवेरियों की प्रतिमाओं के आभूषण, स्वर्ण सहस्रनाम शालग्राम के हार, भुज कीर्तियाँ, शंख और चक्र के स्वर्ण कवच, रत्नों से जडित शंख - चक्र, सुवर्ण मुकुट, वज्रों के मुकुट, मकरतोरण, आदि.... आदि..... असंख्य ।

स्वामी के आभूषणों में उपर्युक्त कहे गये नाम कुछ ही हैं । इनके अलावा अनेक नवरत्न मालायें, मोतियों की मालायें, विशेष संदर्भों में

विशेष रूप से सजाये जानेवाले दिव्याभूषण, स्वामी जी के कोषागार में रखे गये हैं । इनका भार नाप तोल की दृष्टि से हजारों किलोग्राम में हैं । इनका मूल्य निर्धारित करना असाध्य है लेकिन यह मूल्य, संपदा के रूप में भासित है ।

इन आभूषणों को किन भक्तों ने दिया, क्यों दिया और किस संदर्भ में दिया, यह किसको क्या पता ? अगर पता है तो केवल उस भगवान को ही होता होगा ।

वांछित वरप्रदाता के द्वारा जिन भक्तों को वर मिला होगा, उन भक्तों ने वज्रों तथा अमूल्य रत्न खचित आभूषणों को स्वामी को समर्पित किया होगा । उन भक्तों के द्वारा भेंट के रूप में दिये गये आभूषणों से सुअलंकृत होकर आनंदनिलय स्वामी भक्तों को मोहित कर रहा है, आनंद प्रदान कर रहा है । ठीक है, यह अच्छा ही है ।

भगवान जब अलंकृत होते हैं, उनका सौंदर्य मनमोहक होता है । बिना आभूषणों के भी वे अति सुंदर दिखाई देते हैं । बृहस्पतिवार को बिना आभूषणों के, नेत्र दर्शन के समय नेत्रानंद दर्शन प्रदान करता हैं । बृहस्पतिवार के रात को 'पूलंगि सेवा' (फूलों से सुअलंकृत करना, एक प्रकार की सेवा है) में भक्तों को पुलकित कर देता है । शुक्रवार को अभिषेक के समय भक्तों को विस्मरित कर देता है, वेङ्कटेश्वर स्वामी ।

कंटि शुक्रवारमु गडिय लेडिण्ट
अंटि अलमेल्मंग अण्डनुंडे स्वामिनि

सोम्मुलन्नी कडबेट्टि सोम्पुतो गोणमुगट्टि
कम्मनि कदम्बमु कप्पु पन्नीरु

चेम्मतोड वेष्टुवलु रोम्मु तलचुट्टि
तुम्मेद मैचायतोन नेम्मदिनुंडे स्वामिनि

पच्चकप्पुरमे नूरि पसिडिगिन्नेलनिन्चि
तेच्चि शिरसादिग दिगनलदि
अच्चेरपडि चूड अंदरि कन्नुलकिम्पै
निच्चमल्लेपूवु वले निटु तानुंडे स्वामिनि

तट्टुपुनुगे कूरिचि चट्टलु चेरिचि निप्पु
पट्टि करगिंचि वेण्डि पल्यालनिन्चि
दट्टमुग मेनुनिन्त पट्टिंचि दिद्दि
बिट्टु वेडुक मुरियुचुंडे बित्तरि स्वामिनि

देखा मैं ने शुक्रवार को पल के लिये आवास छोड़कर
संग अलमेलमंग आश्रय में स्वामी को

समस्त आभूषण निकालकर सुंदर कौपीन पहनाकर
सुवासित कदंब को भी आवृत्त सुवासित जल
गीले वेष्ठि को छाती व सिर पर बांधकर
भौरें वर्ण समान निश्चिंत स्वामी को

कपूर को पीसकर स्वर्ण बर्तनों में भरकर
ले आकर शिर से चरण तक लेपन करके
आश्चर्य होकर देखा दर्शकों के दृग भावें
चमेली फूल जैसे यहाँ उपस्थित स्वामी को

पुनुगु[1] से भरके थालियों में रखकर आग
में सुलगाकर चांदी की थालियों में भरकर

1. पुनुग - बिल्ली विशेष

उसे आपाद मस्तक लेपन करके
इसे देखकर संतुष्ट होनेवाले विलासी स्वामी को

इस प्रकार बिना आभूषणों के, बिना रेशमी वस्त्रों के, केवल कौपीन पहनकर शुक्रवार के दिन अभिषेक के समय, स्वामी जो दर्शन देते हैं, इस श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का दर्शन पाने वालों के अहोभाग्य का क्या ही वर्णन कर पायेंगे ?

स्वामी की मूर्ति में एक और अद्भुत विशेषता यह है कि, वह एक भक्त को, एक ही दिन के चार पहरों में चार प्रकार की अनुभूतियों को प्रदान करनेवाला दर्शन देता है । इतना ही नहीं, दिव्य मंगल मूर्ति श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का मूलविराट एक ही समय में चार भक्तों को चार प्रकार की दिव्यानुभूति प्रदान करते हुए दर्शन देता है ।

स्वादिष्ट मिष्टान्न (नैवेद्य)

आनंद निलयवासी अलंकार प्रिय हैं ! उससे बढ़कर वे आहार प्रिय भी हैं ! उससे भी बढ़कर वे भक्त प्रिय हैं ! केवल भक्तों के लिये श्रीनिवास भगवान कई - कई प्रकार के स्वादिष्ट, सुवासित दिव्य आहार, मिष्ठान्न भरपेट स्वीकार करता है ।

प्रातः समय पर दूध, मक्खन आदि से प्रारंभ करके क्रम से पोंगल (चावल और मूंगदाल से बनता है), पुलिहोर (इमली का चावल), चक्कर पोंगलि (गुड और चावल से बनता है) दध्योदनम् (दही चावल), क्षीरान्नम् (दूध में चावल को उबालकर मिष्ठान्न बनाना), पायसम् (खीर), कदम्बम् (अनेक प्रकार के स्वादों से मिश्रित चावल), मुलहोर (काली मिर्च का चावल), कट्टे पोंगलि (नमकीन चावल), सिरा (दलिया), केसरी (सूजी

की मिठाई), लड्डू, वडा, अप्पालु (मीठे ढ़ोकले), दोसा, जलेबी, खुशबूदार नमकीन पदार्थ, पूरण पोली, सुगी, गुग्गिल्लु - ऐसे पदार्थों को भरपेट स्वीकार करनेवाले हैं आनंदनिलय स्वामी। अपनी दृष्टि से सभी पदार्थों (नैवेद्य) को पवित्र करके, उनको परोक्ष रूप से चखकर तथा स्वाद लेकर, भुक्तशेष को भक्तों को प्रसाद के रूप में प्रदान करता है। उस प्रसाद को खानेवाले भक्तों को पुष्टि, तुष्टि, एवं संतुष्टि मिलती है। उसके साथ - साथ अनेकानेक इच्छाओं की पूर्ति और असूझ तथा असह्य रोग भी गायब हो जाते हैं। संपूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त होता है।

उपर्युक्त सभी मिष्ठान्नों के साथ, हर दिन विशेष प्रकार के निवेदन अतिरिक्त रूप से चढ़ाया जाता है। रविवार को 'अमृतकलष' (गुड़ और चावल के आटे का घी सहित मिश्रण), सोमवार को बड़े आकार के वड़ा, बुधवार को 'क्षीरान्नम्', बृहस्पतिवार को जलेबियाँ, और तेनुतोललु (नमकीन पदार्थ), शुक्रवार को पूरणपोली, सुगी जैसे मिष्ठान्न नैवेद्य के रूप में चढ़ाये जाते हैं।

इन्दिर वड्डिंच इम्पुगनु
चिन्दक इट्ले भुजिंचवो स्वामि !

अक्कालपाशालु, अप्पालु, वडलु
पेक्कैन सइदम्पु पेणुलु
सक्केर रासुलु सद्योघृतमुलु
किक्किरिय नारगिंचवो स्वामि

इंदिरा ने परोसा मनमोहक ढंग से
बिना बिखेरे खाओ हे स्वामी !

भूख पैदा करनेवाला खीर, ढोकले, वड़ा
मुँह में घुल जानेवाले पेणी
शक्कर की राशियाँ स्वाद भरे घृतम (घी)
बिना मुँह मोड़े इन्हें स्वीकारो स्वामी

उपर्युक्त पद गाकर ताल्लपाक अन्नमाचार्य जी सभी मिष्ठान्नों को भरपूर स्वीकार करने के लिये स्वामी को उकसाते हैं। किसी और पद में वेङ्कटेश्वर स्वामी जिनको नैवेद्य के रूप में स्वीकारता है, उनका वर्णन अन्नमाचार्य जी ऐसा करते हैं -

अरिसेलु, नूने बूरियलु नौगुलु
जक्केर मंडगल वडल
बुरुडलु, पालमंडेग लपूपमु
लय्यलमेलुमंग नी
करुदुग विन्दुवेट्टु बरमान्न
शतम्बुल सूपकोट्लतो
निरत विनिर्मलान्नमुलु
सोनल वेङ्कटेश्वर !!

ढ़ोकले, तेल में तले सुखिया
शक्कर मिश्रित वड़ा की
राशियाँ, दूध मिश्रित अपूपम् (रोटी) से
तुम्हारी अलमेल्मंग विरले ही दावत देती - खीर
शताधिक झोल अनगिनत
सर्वदा निर्मल भात
हे तेजोमय वेङ्कटेश्वर !!

एक अज्ञात भक्त कवि ने श्रीवेङ्कटेश्वर के आहारप्रियत्व का प्रचार करते हुए, स्वामी जितने प्रकार के नैवेद्य को स्वीकारता है, उनकी सूची ही लगा दी, यथा -

''पालु, वेन्न, बकालबातु, दध्योदनम्
बुवुलि, योरेमु वेन्नबूरियलु
सरड़ाल पाशमुल्, चक्केर पुलगमुल्
नुण्वुमंडिगलु मनोहरमुलु

अप्पमु लिड्डेन लति सारमुल् होलिगल्
वडलु, दोसेलु, गल वंटकमुलु
शाकमुल्, सूपमुल् चारु लंबल्लु
शुद्धोदनमुलुनु, सद्योघृतम्मु
पण्ड्लु तेने होब्बट्लु पच्चडुलुनु''

दूध, मक्खन, बकालाभात दधी चावल
बुवुलि, मक्खन की सुखिया
अन्यान्य, प्रकार के खीर, शक्कर पोंगल (गुड़ चावल)
तिलमिश्रित भात, मनोहर व्यंजन

ढोकले रसीले पूरणपोली
वड़ा, दोसा, सहित व्यंजन
शाक, सूप, स्वादिष्ट भक्ष्य (पूरण पोली)
शुद्ध जल, सद्योघृतम्
फ़ल, शहद, पूरणपोली, चट्नी भांति भांति की

स्वामी को समर्पित नैवेद्य में उपर्युक्त पदार्थों की संख्या कुछ ही हैं । इस प्रकार प्रातः से रात तक जितने पकवान तथा दिव्यान्न नैवेद्य

के रूप में आनंद निलयवासी श्रीनिवास को चढ़ाये जाते हैं, उनकी क्रमिक गिनती करने में असमर्थ तेनालि रामकृष्ण कवि (श्रीकृष्णदेवराय की सभा के अष्टदिग्गजों में प्रमुख कवि) ने श्रीनिवास भगवान को 'तिण्डिमोण्डैय्या (खाऊ/खूब खाने का इच्छुक) जी' कहकर तिरुमलवासी को एक बड़ा उपनाम देकर, उनके भोजन प्रियत्व का प्रचार किया ।

विविध रूपों में, ऊँचे भावों से जिसका यशोगान हुआ है वह स्वामी, नैवेद्य को हर बार नई-नई थालियों में स्वीकारता है । एक नैवेद्य को चढ़ाने के बाद, उस थाली को धोकर दूसरा निवेदन चढ़ाया नहीं जाता, बल्कि उनको फ़ेंक दिया जाता है । दुबारा नैवेद्य के लिये नयी थालियाँ ! वे कुछ और नहीं बल्कि मिट्टी के बर्तन हैं । बर्तन भी आधे-- मात्र यानी टूटे हुए बर्तन ! इसी को 'ओटिकुंड' (टूटा हुआ बर्तन), या 'ओडु' (टूटा हुआ) कहते हैं । ऐसे टूटे बर्तनों में भोजन स्वीकार करने वाले आनंदनिलय स्वामी का वैभव और वैभोग 'क्या इस तरह का है !' सोचकर भक्त आश्चर्यचकित हो जाते हैं ।

समय - समय पर बिना मांजे बर्तनों में दावत स्वीकारने वाले श्रीवेङ्कटेश्वर को पदकविता पितामह अन्नमाचार्य जी के साथ हम भी मिलकर यशोगान करेंगे -

वेडुकोंदामा ! वेङ्कटगिरि वेङ्कटेशुनि !

आमटि मोक्कुलवाडे आदिदेवुडे वाडु
तोमनि पल्लालवाडे दुरितदूरुडे

वड्डिकासुलवाडे वनजनाभुडे पुट्टु
गोड्डुराण्ड्रुकु बिड्डल निच्चे गोविन्दुडे

एलमि गोरिन वरालिच्चे देवुडे वाडु
अलमेलमंगा श्री वेङ्कटाद्रिनाथुडे

नमन करें क्या ! वेङ्कटगिरि के वेङ्कटेश को

समस्त मनौतियाँ स्वीकारने वाला आदिदेव है वह
मिट्टी के बर्तनों में नैवेद्य स्वीकारने वाला

ब्याज वसूल करनेवाला लक्षमीपति है वह पैदाइश
निस्संतानवती को संतानवती बनाने वाला गोविन्द है

समस्त इच्छाओं का वरप्रदाता देव वह
अलमेलमंगा श्रीवेङ्कटाद्रि के नाथ हैं

विचित्र मनौतियाँ
(भाँति - भाँति की मनौतियाँ)

'पुर्रेको बुद्धि, जिह्वाको रुचि' (यह तेलुगु भाषा की कहावत है, पुर्रे - खोपड़ी, जिह्वाः जीभ, रुचि - स्वाद, यानी हरेक खोपड़ी अपनी सोच रखती है, हर जीभ अपनी अलग स्वाद रखती है) की भांति करोडों में कितनी ही खोपडियाँ क्यों न हों, उनकी सोच जितनी भी हों, विचारों के अनुसार चाहे जितनी भी अभिरुचियाँ क्यों न हों, उन विचारों एवं अभिरुचियों के अनुकूल रहनेवाले भगवान हैं तिरुमल वेङ्कन्ना ! इसीलिये ताल्लपाक अन्नमय्या ने स्वामी का इस तरह यशोगान किया -

''एन्तमात्रमुन नेव्वरु दलचिन अंतमात्रमे नीवु
अन्तरांतमु लेंचि चूड बिंडंते निप्पटि यन्नट्लु''

जितना जो तेरा स्मरण करता, उतना ही हो, तुम
अंतर्निहित स्वाद देखें तो जितना आटा है उतना ही है भक्ष्य
(निप्पटि)

(इस पद का तात्पर्य है - ''जो भक्त तुम्हारी जितनी स्तुति करता है, तुम उसका उतना फ़लप्रदाता हो ! 'निप्पटि' विशेष प्रकार का ढ़ोकला कह सकते हैं, जिसकी तैयारी में जितना आटा का प्रयोग करते हैं, उतना ही वह ढ़ोकला का आकार व स्वाद होता है माने, जितनी करनी उतनी भरनी ।)

भक्तों के आचार - व्यवहार अनेकानेक होने पर भी, उनकी भाषा एक होने पर भी, अपनी मनौतियों को विभिन्न रूपों में समर्पित करने पर भी, उन सबको स्वीकार करके भक्तों की कामनाओं की पूर्ति कर रहा है तिरुमलेश । वास्तव में मनौतियों को निमित्त बनाकर वह भगवान भक्तों को अपने पास बुलाता है । इसीलिए उसने 'वरप्रदाता' के रूप में, विपदाओं के त्राता के रूप में प्रसिद्धि पाई ।

शिरोमुण्डन समर्पण

तिरुमल पहुँचने के तुरंत बाद भक्तगण सर्वप्रथम शिरोमुण्ड़न करवाकर अपनी प्रधान मनौती स्वामी को समर्पित करते हैं । किसी प्रकार का भेद न रखकर, स्त्री, पुरुष, बच्चे, बड़े, अविवाहितायें, सुहागिनें, विध्वायें, साधु, सन्यासी, आदि अपने केश समर्पित करते हैं, कुछ लोग पूरे बाल समर्पित करते हैं, कुछेक लोग केवल तीन मुट्ठी भर के केश कटवाकर समर्पित करते हैं । ऐसी मनौती तिरुमल क्षेत्र में कब से व्यवहार में आया, इसकी पूर्व जानकारी के नहीं होने पर भी इतना समाचार है कि उन्नीसवीं शती के प्रारंभ से ही यह विस्तृत प्रचार प्राप्त कर गया ।

उलझे केश को स्वीकार कर, भक्तों के उलझनों को सुलझानेवाले तिरुमलेश भक्तों के आपद्बांधव ही है ना !

कुछेक भक्तगण स्वामी के नाम पर उत्सव करते हैं । सेवायें भी करते हैं । फूल समर्पित करते हैं, कुछ और लोग भगवान को जेवर, आभूषण भेंट देते हैं ।

विजयनगर साम्राज्य के चक्रवर्ती श्रीकृष्णदेवरायलु ने सन् 1513 से लेकर सन् 1521 तक सात बार, तिरुमल की यात्रा की । अपनी विजय परंपरा के निशान के रूप में कृष्णदेवरायलु ने तिरुमलेश को अनेक प्रकार की मनौतियाँ समर्पित की ।

उसने, नवरत्न खचित मुकुट, २५ (25) चाँदी की थालियाँ, अमूल्य वज्राभूषण, उत्सव मूर्तियों के नाम पर मणियों से जडित मुकुट, सुवर्ण मकरतोरण, नैवेद्य चढ़ाने हेतु सोने के बर्तन, भेंट के रूप में समर्पित किया और साथ ही साथ आनंदनिलय के विमान (गोपुर) पर सोने का लेपन करवाया । उनके बाद अच्युतरायलु, वेङ्कटपतिरायलु जैसे अनेकानेक चक्रवर्तियों ने जगद् सार्वभौम श्री सप्तगिरीश को अनेक मनौतियाँ समर्पित की ।

चंद भक्तगण नैवेद्य भी समर्पित करते हैं । मनौतियों के हिस्से के रूप में पादयात्रा भी समर्पित करते हैं । ऊँचावृत्ति (भिक्षा माँगना) करते हुए तिरुमल पहुँचते हैं । कुछ लोग 'निलुवु दोपिडि' (तेलुगु शब्द जिसका अर्थ है - दर्शन के समय भक्त अपने सिर से पैर तक पहने हुए सभी आभूषणों को निकालकर हुण्डी में समर्पित कर देता है) समर्पित करते हैं । मनौतियाँ समर्पित करते हैं । तुलाभार कराते हैं । आलय प्रदक्षिणा करते हैं, अंगप्रदक्षिणा भी करते हैं । अखण्ड़ दीपाराधना करते हैं, नारियल चढ़ाते हैं, मिष्ठान्न समर्पित करते हैं, इमली का चावल, पोंगल आदि का निवेदन चढ़ाते हैं । सन्तान प्राप्ति के बाद, भक्तगण चांदी, सोने के पालने (झूले) समर्पित करते हैं ।

पूरे साल में तिरुमलेश के नाम से मनाये जानेवाले उत्सवों में, शोभा यात्राओं में जो गज, घोडे, वृषभ आदि वाहन के आगे चलते हैं, उनको भी मनौती या भेंट के रूप में समर्पित करने की रीति है ।

अनेकानेक भेंट व मनौतियों को स्वीकार कर, उनके पापों को धोकर, रोगों का निवारण कर, उनकी निज इच्छाओं की पूर्ति करने वाला तिरुमलेश अद्भुत, अद्वितीय दैव हैं ।

आनंदप्रद लीलाएँ

पूरे तिरुमल क्षेत्र में कदम कदम पर, प्रत्येक परमाणु विचित्र दिखाई देते हैं । देखने पर हरेक चीज़ 'न भूतो न भविष्यति' (पहले ऐसा कभी न था, आगे नहीं होगा) की भाँति है । अतुलनीय होकर समस्त लोकों में ख्याति प्राप्त महिमान्वित क्षेत्र है, यह तिरुमल क्षेत्र । इस क्षेत्र में विराजमान वेङ्कटाचलपति के बारे में सोचते समय कि वह कितना महान है ! अस्तु -

कामधेनु : कल्पवृक्ष :
चिन्तामणिरिति त्रयम्
वेङ्कटेश त्वमेवाऽसि
शेषागे सर्वदानत :

कामनाओं/इच्छाओं की पूर्ति करनेवाले कल्पवृक्ष की भाँति, कामधेनु की तरह, हाथ में रखे चिन्तामणि की तरह देवदेव श्रीतिरुमलेश तीन चीजों के रूप में वेङ्कटाचलम् पर भासित हो रहा है । उन चीजों की तरह मात्र वर प्रदाता बनकर ही नहीं बल्कि मोक्ष प्रदाता, मुक्ति प्रदान करनेवाला, सैकड़ों वर प्रदान करने वाला भगवान, तिरुमल स्वामी है! इसीलिये ताल्लपाक अन्नमाचार्य जी ने वेङ्कटेश्वर के वर प्रसादी तत्व एवं

भक्त वात्सल्य तत्व का कीर्तिगान किस प्रकार किया, उसे ध्यानपूर्वक देखिये, हृदयानंद पाइए -

येमि वलसिन इच्चु नेप्पुडैननु
एमरक कोलिचिन नीतडे दैवमु ।।टेक।।

घनमुगा निन्दरिकि गन्नुलिच्चु गाल्लिच्चु
पनिसेय जेतुलिच्चु बलियुडै
तनु गोलुवुमनि चित्तमुलिच्चु करुणिंचि
ओनर लोकानकेल्ल नोक्कडे दैवमु ।।येमि वलसिन।।

मच्चिक तनुगोलुव मनसिच्चु माटलिच्चु
कुच्चितमु लेनि कोडुकुल निच्चुनु
चोच्चिनचोटे चोच्चि शुभमिच्चु सुखमिच्चु
निच्चलु लोकानकेल्ल निजमैन दैवमु ।।येमि वलसिन।।

पन्तमाडि कोलिचिन प्राणमिच्चु प्रायमिच्चु
येन्तटि पदवुलैन निट्टे इच्चु
विन्त विभवाल वेङ्कटेशुडिदे मा
यंतरंगमुन नुण्डे अरचेतिदैवमु ।।येमि वलसिन।।

जो माँगा दे दिया कभी भी
बगैर भूले स्मरण करने पर यही दैव

सघन सभी को दृष्टि देता, पैर देता
काम करने के लिये हाथ देता, शक्तिशाली होकर
उसकी प्रार्थना हेतु हृदय देता करुणा करके
वह मानव लोक के लिये एकमात्र दैव ।।

भले ढंग से उसके स्मरण पर मन देता, वाक् देता
कुत्सित रहित पुत्र देता
भेद-भेदकर शुभ देता, सुख देता
नित्यप्रति समस्त लोक के लिये सच्चा दैव ।।

जिद्दपूर्वक प्रार्थना की तो प्राण देता यौवन देता
बडे-से-बडे पद ऐसे ही दे देता
विचित्र वैभव युक्त वेङ्कटेश्वर हमारे
अंतरंग स्थित करतल दैव ।।

विस्मरण न करके प्रार्थना मात्र करने से पर्याप्त है - नेत्र/आँखें देता है, पैर देता है ! काम करने के लिये हाथ देता है ! उसकी स्तुति करने के लिये वह हमें उकसाता है तथा हमारी इच्छा की पूर्ति भी करता है । ऐसा दैव इस विश्व में यह एक मात्र है । कोई दूसरा नहीं है, दिखाई भी नहीं देता !

अगर भली - भाँति स्तुति करेंगे, तो भक्त को वाक् चातुर्य प्रदान करता है । गूंगे से बुलवाता है । कुत्स रहित पुत्रों को प्रदान करता है । पुनः-पुनः शुभ ही शुभ प्रदान करता है । सुखों को प्रदान करता है । इस विश्व में ऐसा सत्यवान तथा अच्छा भगवान दूसरा कोई नहीं है ।

जिद्दी बनकर दीक्षा सहित उसकी स्तुति करेंगे तो बस ! प्राण भी देता है, मान देता है । कितने भी बड़े पद क्यों न हो, बडा अधिकार ही क्यों न हो, प्रार्थना करने पर अनायास ही वर दे देता है ! हमारे हाथों में विद्यमान दैव की भाँति भासित होकर अनेक व विचित्र विभव के साथ प्रकाशमान रहनेवाले वेङ्कटेश्वर जैसा दैव कहीं नहीं है । 'नहीं होगा', कहते हुए अन्नमाचार्य ने बुलंदी आवाज में कीर्तिगान किया ।

इस प्रकार आश्चर्यचकित कर देने वाले आनंदनिलय स्वामी की लीलायें एक, दो नहीं, अनंत हैं । उनको जानना, जानकारी देना, यह सहस्र फणवाले आदिशेष के लिये भी संभव नहीं है । हम क्या ही चीज हैं ? फ़िर भी कुछ बातें सुनिये -

एकदा समय में पाँच लोग, एक के पीछे एक करके रास्ते में जा रहे थे । उनमें से एक पैदायिश गूंगा था, दूसरा पैदायिश बहरा था, तीसरे व्यक्ति के दोनों हाथ नहीं थे, चौथा व्यक्ति पैदायिश अंधा था और पाँचवा तथा अंतिम व्यक्ति लंगड़ा था - सभी एक - दूसरे का हाथ पकडकर, सूझ के बिना, जोर से चिल्लाते हुए, दीनावस्था में चल रहे थे । इनकी आवाज अति दीन तथा दयार्द्रता से भरी हुई थी ।

हम अंधे हैं, हम लंगडे हैं, हम गूंगे हैं, हम बहरे हैं - इस प्रकार कर्ण कर्कश आवाज में चीखते हुए रास्ते में जानेवाले इनको एक पुण्यात्मा ने देखा ।

पैसे या कोई दान देते हुए उसने ऐसा कहा - अरे ! राहियों ! आप इस प्रकार यहाँ - वहाँ दिशाहीन होकर क्यों घूम रहे हो ? इस प्रकार घूमने से आप के कष्ट कब और कैसे छूटेंगे ? मैं आपको एक उपाय बताऊँगा । सुनो ।

'देखो ! उस ओर मुड़ो ! आपके कदमों को उस ओर करके चलो । जानना चाह रहे हो क्या कि उस ओर क्या है ? आपके सारे पापों को ध्वंस करनेवाला वेङ्कटाचल ही है । बिना विलंब किये धीरे - धीरे तिरुवेङ्कटाचलम् की ओर मुडिये !' कहते हुए उस सहृदयी राही ने उनको रास्ता दिखाया और खुद अपना रास्ता मोल लिया । इन लोगों ने एक दो कदम आगे बढाया कि !

''मूकारब्धम् कमपि बधिराः
श्लोक माकर्णयन्ति
श्रद्धालुस्तम् विलिखति कुणि
श्लाघया वीक्षतेन्धः
अध्यारोहत्यहः! सहसा
पंगुरप्यद्रिश्रृंगं
सांद्रालस्या शिशुभरणतो
मंदमायाति वन्ध्या''

- वेङ्कटाध्वरि, विश्वगुणादर्शम्

वेङ्कटाचलम् की ठण्ड़ी हवा ने उनका स्पर्श किया... वेङ्कटेश्वर की दृष्टि उन पर प्रसारित हुई, बस !

गूंगे में वाक् शक्ति आई और वह स्पष्ट रूप से श्लोक बोलने लगा, उस श्लोक को बधिर सुनने लगा जिस व्यक्ति के हाथ नहीं थे, अपने हाथों से इस श्लोक को लिखने लगा और जन्मांध व्यक्ति इन सबको देखकर अद्भुत् ! परमाद्भुत् कहने लगा । लंगडे व्यक्ति के दोनों पैर ठीक हो गये और वह जल्दी - जल्दी तिरुमल पर्वत को चढ़ने लग गया ! इतना ही नहीं ! उनमें एक स्त्री थी और वह निस्संतान थी । उसको लोगों से खरी - खोटी सुनना पड़ता था - तुम बंजरमूल हो, तम्हें बच्चे नहीं होंगे । जब ऐसी औरत ने आनंद निलयवासी की प्रार्थना की तो तुरंत भगवान ने उसे बच्चा अनुग्रहीत किया ।

उस स्वामी की दया से वह संतानवती हुई । वह अपने छोटे बच्चे को गोद में लेकर बडे लाड - प्यार से उसे चूमते हुए धीरे - धीरे पर्वत चढ़ रही थी और ऐसा कह भी रही थी - स्वामी ! सप्ताचलाधीश्वर ! मेरे मूलबंजरत्व को दूर करके तुमने मुझे संतान प्रदान किया ! देखो, यही

तेरे द्वारा प्रदत्त मेरा बेटा ! अपने बच्चे को दिखाने के लिए वह धीरे - धीरे पर्वत चढ़ रही है । अद्भुत ! इस स्वामी की लीलायें परमाद्भुत हैं ना ! उस स्वामी की स्तुति इस प्रकार करेंगे - हे स्वामी ! सप्ताचलाधीश! तुम भक्तों की मिन्नतों के अनुकूल वर प्रदान करते रहते हो, हर जरुरत की पूर्ति करते हो । ऐसे में तुम्हारा बार - बार यशोगान करने की क्या ही आवश्यकता है ! इसीलिये हे स्वामी ! एक ही शब्द से तुम्हारी प्रार्थना करूँगा -

''श्रीनिवास बहूक्त्या किम् ?
भक्तसर्वार्तिनाशने
सर्वार्थपूरणे चापि
त्वत्समोण्डे न कुत्रचित्''

इस ब्रह्माण्ड के खण्डों में भक्तों के कष्टों को दूर करने में, हरेक आवश्यकता की पूर्ति करने में तुम्हारा समतुल्य कोई भगवान नहीं है स्वामी ! नहीं है !

* * * * *

अभी तक 'घन वेङ्कटेश्वर' जिस अद्भुत पर्वत पर विराजमान होकर दर्शन दे रहा है, उसका संक्षेप में जानकारी हमने प्राप्त किया है । उस स्वामी के जितने सार्थक नाम हैं, उनकी जानकारी व विशिष्टता आदि मालूम किया । जिस मुद्रा में स्वामी खडे हैं, उसकी जानकारी, वह जिन दिव्याभूषणों से सुअलंकृत होता है, उनकी जानकारी, आनंद निलय स्वामी के लिये नैवेद्य में चढ़ाये जानेवाले मिष्ठान्न, उस स्वामी को भक्तों के द्वारा समर्पित किये जानेवाली मनौतियाँ, उसकी अद्भुत लीलाओं, महिमाओं आदि की हमने यथासंभव जानकारी प्राप्त की ।

इसके बाद श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के उत्सव, वैभव आदि की जानकारी लेने से पहले स्वामी जी की पंचबेर (बेर = मूर्ति) के बारे में जानकारी लेंगे।

पँचबेर (पाँच मूर्तियाँ)

श्रीनिवास प्रभू, प्रार्थकों के कल्पवृक्ष ! हाथों लगे सुवर्ण ! छूने वालों की पहली कमाई ! सेवकों के हाथों में मणिक्य हैं । आस्तिकों के परब्रह्म ! इच्छुकों के मनोरथ सिद्धि प्रदान करने वाले विश्वसनीय दैव! तन्मयपूर्वक स्तुति करने वालों के आनंद रूपी हैं ! कई बंजरों को संतानवती बनाने वाले हैं यह स्वामी ! कई अन्यों के अद्भुत वैद्य ! आनंदनिलयवासी आपद्बांधव !

इसीलिए भक्तगण अपने कुलदैव की भासित मूर्ति श्रीनिवास भगवान का दर्शन करने के लिये निरंतर, निर्विराम रूप से तिरुमल की यात्रा करते रहते हैं । भक्त लोग अपनी - अपनी इच्छा के अनुसार सुप्रभात सेवा में भाग लेते हैं, नैवेद्य समर्पित करते हैं, नित्य कल्याणोत्सव में भाग लेकर नित्य कल्याण चक्रवर्ति के वैभव की अनुभूति पाते हैं । कुछेक भक्त 'पूलंगिसेवा' (भगवान को फूल समर्पित करना), 'तिरुप्पावड' सेवा करके प्रसन्न हो जाते हैं । कुछ भक्त शुक्रवार के अभिषेक (शुक्रवाराभिषेकम्) में स्वामी का दर्शन करके चरितार्थ हो जाते हैं । इस प्रकार प्रतिदिन भक्तगण श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के कल्याणोत्सव, ब्रह्मोत्सव, वसंतोत्सव जैसी विभिन्न सेवाएँ कराकर, स्वामी का दर्शन करके धन्य जीवी बन जाते हैं । लेकिन एक निश्चित संदेह भक्तों में जिज्ञासा पैदा कर सकता है ! -

अन्यान्य उत्सवों, सवाओं में करोड़ों भक्तों को दर्शन देकर दिव्यानुभूति को उनमें वितरण करनेवाले श्रीनिवास परंधाम मूर्ति (मूलविराट) हर जगह एक ही हैं या अलग - अलग हैं ? अगर अलग - अलग हैं तो

स्वामी की कितनी मूर्तियाँ विद्यमान हैं ? किस मूर्ति के लिए कौन-सी सेवा समर्पित की जाती है ? यह संदेह, प्रश्न, करोंड़ों लोगों में पैदा होती है ।

उपर्युक्त संदेहों में से कुछेक संदेहों के निवारण के उपरांत ही हम अखिलांड कोटि ब्रह्माण्ड नायक की उत्सव विशेषताओं की चर्चा करेंगे ।

तिरुमल क्षेत्र में ''स्वयंभू'' होकर विराजमान श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी की पूजा और नैवेद्य अनादि काल से ही प्राचीनतम वैखानस आगम के अनुसार किया जा रहा है । भक्तगण अपने निजी कुछ कार्यक्रमों को भगवान पर आरोपित करके उस पुरुषोत्तम की सेवा कर रहे हैं । इस प्रकार की उपासना भी उनके लिए मोक्ष प्राप्ति के लिए आसान मार्ग है । इसीलिये भक्तगण स्नान (अभिषेक), अर्चना (पूजा), भोजन (नैवेद्य), यात्रा (शोभा यात्रा), शयन (पान्पु/एकांत सेवा), आदि सेवायें भगवान के लिये करते हैं । भक्तों के द्वारा किये जानेवाली सेवाओं के लिये अचल स्थिर मूलविराट, शोभा यात्रा, शयन, जैसे कार्यक्रमों के अनुकूल नहीं होता । इसलिए आगमशास्त्र ने उपर्युक्त सेवाओं के अनुकूल (1) ध्रुवबेरम्, (2) कौतुकबेरम्, (3) स्नपनबेरम्, (4) बलिबेरम्, (5) उत्सवबेरम्, कहकर पाँच मूर्तियों की तैयारी के लिये अनुमति दी । 'बेरम्' का अर्थ शिला या मूर्ति है ।

वैखानस आगम ने तिरुमल क्षेत्र में भी श्रीनिवास भगवान की सेवा के लिये उपर्युक्त पाँच मूर्तियों का उपयोग करने के लिए अनुमति दी । तिरुमल में कुछ सेवायें मूलविराट को और कुछ अन्य सेवायें उत्सव मूर्तियों के लिए समर्पित की जाती हैं ।

1. ध्रुवबेरम्

ध्रुवमूर्ति, मूलबेरम् - ये उस मूलविराट, मूर्ति के नाम हैं । आनंदनिलय में स्वयंभू होकर शंख - चक्र के साथ उद्भुत शालग्राम की मूर्ति, ही श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी हैं । अनुमान लगाया जाता है कि इस मूर्ति का कद आठ फुट के आस पास है । मुख्य रूप से मूलविराट को प्रतिदिन दो बार 'तोमाल सेवा' और तीन बार 'अर्चना' तथा नैवेद्य समर्पित किये जाते हैं । प्रत्येक दिन कतार (क्यू) में जाकर जिस स्वामी का दर्शन भक्तगण करते हैं, वह मूलविराट ही हैं । वक्षःस्थल लक्ष्मी समेत श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के मूलविराट को प्रति मंगलवार के दिन दूसरी बार अर्चना 108 सोने के कमल के फूलों से अष्टदल पाद पद्माराधना नामक पुष्पार्चना समर्पित की जाती है । हर बृहस्पतिवार सुबह को 'तिरुप्पावड़' सेवा, नेत्रदर्शन तथा शाम को 'पूलंगिसेवा' समर्पित की जाती हैं । हर शुक्रवार को, प्रातः काल में सुगंधित पूजा सामग्री से मूलविराट का अभिषेक किया जाता है ।

2. कौतुकबेरम्

'भोग श्रीनिवास मूर्ति', मनवालप्पेरुमाल - ये इस मूर्ति के नाम हैं । शंखचक्रधारी, चतुर्भुजवाले यह भोगमूर्ति हर रूप से मूलविराट का प्रति रूप है लेकिन आकार में छोटा है । डेढ़ फुट (1½) के इस चांदी की मूर्ति को सन् 614 में पल्लवराणी 'सामवै' ने भेंट दिया था । हर समय मूलविराट के पादपद्मों के आगे रहनेवाले इस भोग श्रीनिवास मूर्ति का प्रातः के समय आकाशगंगा के जल से अभिषेक, हर बुधवार को सोने के चौखट (बंगारुवाकिलि) के आगे सहस्रकलषाभिषेक, प्रतिदिन रात को एकांत सेवा यानी 'पवलिम्पु सेवा' समर्पित किये जाते हैं ।

3. बलिबेरम्

बलिबेरम् मूर्ति के अन्य दो नाम कोलुवु श्रीनिवास मूर्ति, लेखन श्रीनिवास मूर्ति हैं। चाँदी से बनी भोग श्रीनिवास मूर्ति के ही जैसी यह मूर्ति है लेकिन यह मूर्ति पंचलोह से बनी है ।

प्रत्येक दिन मंदिर में तोमाल सेवा के बाद, अर्चना से पूर्व स्नपन मण्ड़प में स्वर्ण सिंहासन पर 'कोलुवु' (सभा) किया जाता है। इसमें कोलुवु श्रीनिवास मूर्ति की छत्र - चामर आदि के साथ मर्यादापूर्वक सार्वभौमोचित सत्कार और आस्थान (राजा की सभा) किया जाता है । इस कोलुवु में तत् दिवसीय तिथि, वार और नक्षत्र का पंचांग श्रवण होता है, तथा उसके पहले दिन के आय - व्यय (वसूल तथा खर्चा) और कुलवसूली का हिसाब स्वामी के आगे समर्पित किया जाता है । देवस्थानम् के कुल आय - व्यय के हिसाब का पर्यवेक्षण करने का अधिकार मूर्ति, यही कोलुवु श्रीनिवास मूर्ति है ।

4. स्नपनबेरम्

उग्र श्रीनिवास मूर्ति, वेङ्कटत्तुरैवर, स्नपनमूर्ति, ये इस स्वामी के नाम हैं। श्रीदेवी - भूदेवी समेत उग्र श्रीनिवास की पंचलोह मूर्ति, प्राचीन समय में उत्सवों में उपयोग की जाती थी ।

14 वीं शताब्दी में, एक बार कभी ब्रह्मोत्सव के समय कुछ व्यतिरेकी घटनाओं के घटित होने के कारण उग्र श्रीनिवास मूर्ति का शोभायात्रा में उपयोग करना पूर्ण रूप से बन्द कर दिया गया ।

वर्ष में फ़िर भी मात्र कैशिक द्वादशी को यानी कार्तिक मास में, प्रातः काल के समय यह उग्र श्रीनिवास मूर्ति शोभा यात्रा के लिये बाहर

निकलकर सूर्योदय से बहुत पहले ही मंदिर में वापिस लौट जाते हैं । श्रीदेवी - भूदेवी समेत इस उग्र श्रीनिवास मूर्ति का कद 25 अंगुल का होता है ।

5. उत्सवबेरम्

मलयप्प स्वामी, उत्सव श्रीनिवास मूर्ति इनके नाम हैं। सन् 1339 से ही इन मूर्तियों का विवरण हमें मिलता है । मंदिर के बाहर कल्याणोत्सव, ब्रह्मोत्सव आदि के साथ हर नित्योत्सव, वारोत्सव, मासोत्सव, वार्षिकोत्सव के समय भक्तों को यही मलयप्प स्वामी दर्शन देते हैं। उग्र श्रीनिवास मूर्ति के बाद श्रीदेवी भूदेवी समेत उत्सवों में भागीदार बननेवाले श्री मलयप्प स्वामी पंचलोह मूर्ति का कद अंदाज से 30 अंगुल का है। 'मलयप्पकोना' (कोना = घाटी) में प्राप्त होने के कारण इस मूर्ति का नाम 'मलयप्प स्वामी' पड़ा ।

श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी की ये पाँच मूर्तियाँ ही नहीं बल्कि आनंदनिलय में 1. श्रीसुदर्शन चक्रताल्वार, 2. श्रीसीताराम लक्ष्मण, 3. श्रीरुक्मिणी कृष्ण, 4. श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के पारिवारिक सदस्य कहने वाले (i) अनंत, (ii) विश्वक्सेन, (iii) गरुत्मंत, 5. श्रीराम परविार के (i) सुग्रीव, (ii) अंगद, (iii) आज्ञापालक हनुमान आदि की मूर्तियाँ भी विद्यमान रहती हैं। कुछेक प्रकार के उत्सव और सेवायें इन मूर्तियों को भी यथासमय की जाती हैं ।

इस प्रकार तिरुमल स्वामी के मंदिर में श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के मूलविराट के साथ विराजमान उपर्युक्त सभी मूर्तियों की विशेष पर्वों में यथासमय उत्सव एवं सेवायें वैभव पूर्ण ढंग से समर्पित की जा रही हैं। हमने अभी तक पूरे वर्ष में किये जानेवाले उत्सवों के बारे में जानकारी ली है ।

मनोह्लादकारी उत्सव
(मनोल्लास के साथ मनाये जानेवाले उत्सव)

तिरुमल श्रीनिवास भगवान को पूरे वर्ष में मनाये जानेवाले 1. नित्योत्सव, 2. वारोत्सव, 3. मासोत्सव, 4. वार्षिकोत्सव या संवत्सरोत्सव को चार भागों में विभाजित करके, संक्षेप में उनकी चर्चा करेंगे ।

नित्योत्सव

तिरुमल पर्वत पर हरेक दिन प्रातः काल की सुप्रभात सेवा से प्रारंभ करके रात की एकांत सेवा तक श्रीनिवास भगवान की अनेक सेवायें, उत्सव मनाये जाते हैं । पूरे एक दिन के कार्यक्रम को 'नित्योत्सव' कहते हैं । उनकी समग्र चर्चा अब हम करेंगे ।

1. सुप्रभातम्

तिरुमल में श्रीनिवास भगवान को समर्पित प्रथम सेवा 'सुप्रभातम्' है । शयन मण्डप में मखमल बिस्तर पर सोनेवाले श्रीनिवास प्रभु को, उस बिस्तर से जगाने का कार्यक्रम 'सुप्रभातम्' कहा जाता है ।

प्रतिदिन, प्रातःकाल के समय सोने की चौखट (बंगारु वाकिलि) के आगे आचार्य पुरुष 'कौसल्या सुप्रजा रामा.....' कहते सुप्रभात के श्लोकों का पठन करते रहते हैं, तभी उसी समय ताल्लपाक अन्नमय्या के वंशज स्वामी को जगाने के लिये 'मेलुको श्रृंगार राय.....' (जागो हे श्रृंगार पुरुष...) कहते हुए राग युक्त गीत गाते हैं ।

इस समय अर्चक स्वामी, जीयंगार स्वामी, आलय के अधिकारीगण, सुप्रभात सेवा के लिये पैसा जिन्होंने जमा किया, वे भक्तगण आदि सभी बंगारुवाकिलि (सोने की चौखट) के आगे जमा होकर बंगारु वाकिल्लु

(सोने के दखाजे) के खुलने के इंतजार में जिज्ञासा भरे मन से खडे रहते हैं ।

बंगारुवाकिलि के आगे आचार्य पुरुषों के द्वारा, सुप्रभात सेवा को पूरा करने के बाद बंगारु वाकिल्लु (सोने के दखाजे) खोले जाते हैं । सभी भक्तगण एक-के-बाद एक जाकर स्वामी का दर्शन करके आरती, तीर्थ तथा शठारी स्वीकार करते हैं । अंत में सुप्रभात अर्जित सेवा के लिये पैसा जमा करनेवाले भक्तगण भी जाकर स्वामी का दर्शन कर लेते हैं । सुप्रभात सेवा के समय श्रीनिवास भगवान के आपाद मस्तक दर्शन को ''विश्वरूप दर्शन'' कहते हैं । इस समय श्रीनिवास भगवान के पाददर्शन (चरण दर्शन) करने से समस्त पाप धुल जाते हैं । इसीलिये ''पाददर्शनम् पापविमोचनम्'' सूक्ति प्रसिद्ध हुई ।

2. तोमाल सेवा

आनंदनिलय के श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी की मूल मूर्ति, उत्सवमूर्तियों.... एवं अन्यान्य मूर्तियों को पुष्पमालाओं, तुलसी मालाओं से अलंकृत करने के कार्यक्रम को 'तोमाल सेवा' कहते हैं । भुजाओं से नीचे तक झूलने वाली मालाओं से स्वामी को अलंकृत करने की विधा को तोलमालै कहते हैं । यह 'तोमाला' के रूप में बदल गया । 'तोल' का अर्थ 'भुजा' है । पैसा जमा करने वाले (इस सेवा मात्र के लिये) भक्त इस सेवा में भाग लेकर स्वामी का दर्शन कर सकते हैं । लेकिन संध्या समय के तोमाल सेवा, एकांत में किया जाता है यानी कोई भक्त उसमें भागीदार नहीं बन सकता है ।

एकांगी या जीयंगार स्वामी 'पूलअर' (पूल = फूल, अर = कमरा) में पहले से गूंथी गयी फूल मालाओं को ले आकर अर्चक स्वामी को देते

हैं और अर्चक स्वामी भगवान की पूरी मूर्ति (आपाद मस्तक) को सु अलंकृत करते हैं। यह सेवा अंदाजापूर्वक आधे घंटे के लिये की जाती है।

3. कोलुवु (सभा)

तोमाल सेवा के उपरांत हर दिन बंगारुवाकिलि (सुवर्ण चौखट) के अंदर के स्नपन मण्ड़प के सुवर्ण सिंहासन पर कोलुवु श्रीनिवास मूर्ति की सभा का कार्यक्रम चलाया जाता है। उस समय, उस दिन के तिथि, वार, नक्षत्र आदि के विवरण के साथ पंचांग श्रवण होता है और उसके बाद, उसके पहले दिन हुण्ड़ी में समर्पित मूल धन और उसके आय-व्यय का हिसाब, अन्नदाताओं के नाम, श्रीनिवास भगवान को सुनाया जाता है। तदुपरांत कोलुवु श्रीनिवास मूर्ति को गुड़ मिश्रित तिल को नैवेद्य के रूप में चढ़ाया जाता है।

ब्रह्मोत्सव के पहले दिन यानी केवल ध्वजारोहण के दिन यह 'कोलुवु' बंगारुवाकिलि (सुवर्णचौखट) के आगे की जाती है।

एक और विशेषता देखिए - हर दिन 'कोलुवु' में श्रीनिवास भगवान, अर्चक स्वामी को 'तण्डुलदान' करते हैं। यानी तण्डुल (चावल), दक्षिणा सहित ताम्बूल दान देते हैं। तब अर्चक स्वामी श्रीनिवास भगवान को ''नित्यैश्वर्यो भव'' कहकर आशीवर्चन देते हैं। यह ''कोलुवु'' संपूर्णतया एकांत (कोई भक्त इसे देख नहीं सकता) में किया जाता है।

4. सहस्रनामार्चना

श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के मूलविराट को तोमाल सेवा के उपरांत हर दिन सुबह सहस्रनामार्चना समर्पित की जाती है।

जीयंगार लोगों से तुलसी पत्रों को लेकर अर्चक स्वामी श्रीवेङ्कटेश्वर के सहस्रनामों का पठन करते हुए श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान के चरणों में अर्चना समर्पित करते हैं। उसके उपरांत श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के चरणों से तुलसी पत्र स्वीकार कर अर्चक स्वामी भगवान के वक्षःस्थल पर विराजमान श्रीमहालक्ष्मी जगन्माता के महालक्ष्मी चतुर्विंशती (24 = चौबीस) नामों से अर्चना करते हैं। हर दिन अंदाजापूर्वक आधा घण्टे के लिये की जानेवाली इस सेवा में भक्त गण मूल्य चुकाकर दर्शन कर सकते हैं।

इसके अलावा हर दिन श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान का दूसरी व तीसरी अर्चना के रूप में केवल अष्टोत्तर शतनामावली के साथ दो बार अर्चना की जाती है। ये दोनों एकांत में की जाती है। केवल मंगलवार के दिन दूसरी अर्चना जो 'अष्टदल पाद पद्माराधना' के रूप में की जाती है, उसमें भक्तगण मूल्य चुकाकर इस सेवा में भाग ले सकते हैं।

5. निवेदन/नैवेद्य

हर एक दिन प्रातःकाल में सहस्रनामार्चना करने के तुरंत बाद गर्भालय के श्रीवेङ्कटेश्वर मूलविराट तथा अन्य मूर्तियों को नैवेद्य समर्पित किया जाता है। लड्डू, वड़ा, दहीचावल, इमलीचावल, मूंगदालचावल (पोंगल) आदि का नैवेद्य समर्पित होता है। पहले निवेदन को 'पहली घण्टी' कहते हैं।

मध्याह्न के समय के नैवेद्य को - दूसरी घण्टी कहते हैं।

रात के समय के नैवेद्य को - तीसरी घंटी अथवा रात की घण्टी कहते हैं। रात की एकांत सेवा से पहले जो नैवेद्य समर्पित होता है, उसे

'तिरुवीसम्' नामक घण्टी कहते हैं जिसमें 'चक्केर पोंगल' (मीठाचावल, गुड और चावल, घी सहित मिष्ठान्न), स्वामी को नैवेद्य के रूप में समर्पित करते हैं । इसे सन्निधि के भाष्यकारों में फ़िर नैवेद्य के रूप में चढ़ाते हैं । ये सारे नैवेद्य एकांत में अर्चकस्वामी अकेले ही समर्पित करते हैं ।

6. शात्तुमोर

स्वामी जी को समर्पित दहीचावल और चक्केर पोंगल फ़िर रामानुजाचार्य को नैवेद्य के रूप में चढ़ाते हैं । इसके उपरांत वैष्णवाचार्यगण स्वामी की सन्निधि में दिव्य प्रबंधों का पारायण करते हैं । इसी को 'शात्तुमोर' कहते हैं । इसके बाद ये सभी वैष्णवाचार्य, रामानुजाचार्य को समर्पित नैवेद्य को प्रसाद के रूप में स्वीकार करते हैं ।

7. कल्याणोत्सव

स्वामी जी के आलय के संपंगी प्रदक्षिणा में स्थित श्रीवेङ्कटरमण स्वामी के कल्याण मण्डप में श्रीदेवी - भूदेवी समेत श्रीमलयप्प स्वामी का प्रति नित्य मध्याह्न के 12 बजे को 'कल्याणोत्सव' किया जाता है ।

भक्तगण निर्णीत पैसे जमा करके कल्याणोत्सव के भागीदार बन सकते हैं ।

विशेष उत्सवों के समय, विशेष संदर्भों में किये जानेवाले कल्याणोत्सव को 15वीं शताब्दी में ताल्लपाक अन्नमाचार्य जी ने नित्यकल्याणोत्सव के रूप में मनाना प्रारंभ किया । तब से कल्याणोत्सव में अन्नमाचार्य जी के वंशज, कन्यादाताओं के रूप में रहते आये हैं और आलय सत्कार प्राप्त कर रहे हैं ।

ब्रह्मोत्सव, पुष्पयाग, पवित्रोत्सव जैसे विशेष संदर्भों को छोड़कर बाकी दिनों में विधिपूर्वक श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का नित्य कल्याणोत्सव मनाया जाता है ।

जो भक्त कल्याणोत्सव कराते हैं, उनको प्रसाद दिया जाता है ।

8. डोलोत्सव (अद्दाल मण्डप = आईना महल)

हरेक दिन दोपहर को दो (२) बजे के समय पर, निर्णीत पैसे (आर्जित सेवा) जमा करने पर भक्तों की माँग के अनुरूप श्रीदेवी - भूदेवी समेत मलयप्प स्वामी का आईना महल में डोलोत्सव किया जाता है । यह आर्जित सेवा है, अगर माँग नहीं होती, तो यह उत्सव मनाया नहीं जाता है ।

9. आर्जित ब्रह्मोत्सव

आर्जित सेवा के रूप में पैसा जमा करके, भक्तगण जब माँग करते हैं, तब आलय के सामने वाले वैभव मण्ड़प में श्रीदेवी - भूदेवी समेत मलयप्प स्वामी का आर्जित ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है । महाशेषवाहन, गरुडवाहन तथा हनुमन्त वाहन पर ही प्रमुख रूप से आर्जित ब्रह्मोत्सव में स्वामी दर्शन देते हैं ।

कल्याणोत्सव के बाद आर्जित रूप में जब माँग होती है, तभी यह आर्जित ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है ।

10. वाहन सेवायें

भक्तगण इस आर्जित सेवा को अपनी माँग के अनुरूप, अपने अनुकूल दिन को करा सकते हैं । ये आर्जित सेवाएँ, माँग के अनुसार

ही किए जाते हैं । प्रधानतया स्वामी का दर्शन महाशेषवाहन पर, गरुडवाहन पर और हनुमन्तवाहन पर कर सकते हैं । दोपहर के दो (२) बजे को आलय के सामनेवाले वैभव मण्डप में यह सेवा की जाती है ।

11. आर्जित वसंतोत्सव

हरेक दिन दोपहर के तीन बजे को भक्तों की मांग के अनुसार, आलय के सामने के वैभव मण्ड़प में आर्जित वसंतोत्सव किया जाता है । श्रीदेवी - भूदेवी समेत मलयप्प स्वामी को यह सेवा समर्पित की जाती है ।

12. सहस्र दीपालंकरण सेवा

प्रत्येक दिन, शाम के छःबजे को मंदिर के बाहर, आग्नेय कोने में स्थित कोलुवु मण्डप (सभा मण्डप) में 'सहस्रदीपालंकरण सेवा' नामांकित 'ऊँजल सेवा' (ऊँजल = झूला) की जाती है ।

श्रीदेवी - भूदेवी समेत मलयप्प स्वामी शोभा यात्रा के लिये निकलकर एक हजार दीपों से सुसज्जित मण्ड़प में आकर ऊँजल सेवा में विराजमान हो जाते हैं । भक्तगण आर्जित सेवा के रूप में इसे कर सकते हैं, अन्यथा भी यह सेवा हर शाम को विधिवत की जाती है । 'सहस्र दीपालंकरण सेवा' के उपरांत, महाप्रदक्षिणा के मार्ग से स्वामी अपने दोनों देवेरियों के साथ शोभायात्रा के लिये निकलते हैं । हर महीने विशेषतया रोहिणी नक्षत्र के लगने पर रुक्मिणी श्रीकष्ण का, पुनर्वसु नक्षत्र के लगने पर सीता - राम - लक्ष्मण का सहस्र दीपालंकरण सेवा की जाती है । आर्द्रा नक्षत्र के लगने पर श्री मलयप्प स्वामी की पालकी के आगे एक और पालकी में श्रीरामानुजाचार्य जी की प्रतिमा शोभा यात्रा के लिये निकलती है ।

13. एकांत सेवा

'एकांत सेवा' को 'पान्पु सेवा' (पान्पु = बिस्तर), 'पव्वलिम्मु सेवा' (पव्वलिम्पु = सुलाना) भी कहते हैं । तिरुमल भगवान के आलय में नित्यप्रति होने वाले कार्यक्रमों में प्रधान एवं अन्तिम सेवा 'एकांत सेवा' ही है । एकांत सेवा के समय सर्वदर्शन को रोका जाता है ।

शयन मण्डप में, चांदी से बनी जंजीरों से टंगी हुई सुवर्ण पलंग पर भोग श्रीनिवास मूर्ति की प्रतिमा को लिटाया जाता है ।

श्रीराम के बरामदे में तब तक ताल्लपाक के वंशज लोरी के गीत गाने के लिये सन्नद्ध रहते हैं । उसी समय मातृ श्रीतरिगोंड वेंगमाम्बा के वंशजों की ओर से आरती की थाली वहाँ आ जाती है ।

इस आर्जित सेवा के लिये पैसे जमा करके भक्तगण कतारों में बैठकर जब वीक्षण करते रहते हैं तब अन्नमाचार्य के वंशज 'जो अच्युतानंद जो जो मुकुंदा....!' (जो - जो = सो जाओ) का गीत आलापते हैं, और तब तरिगोंड वेंगमाम्बा की 'मुत्याल हारति' (मोतियों की आरती) उतारी जाती है । इस सेवा में भाग लेनेवाले भक्त दर्शकों को अनेक प्रकार के फ़लों से मिश्रित अल्पोष्ण दूध का 'मेवा' नामक पंचामृत प्रसाद दिया जाता है । इस सेवा के बाद बंगारु वाकिल्लु (सुवर्ण दखाजे) को बन्द कर देते हैं ।

वारोत्सव (सप्ताहोत्सव)

श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी की हफ्ते के हर रोज में विशेष पूजा अनिवार्य रूप से की जाती है । इन्हीं को वारोत्सव कहते हैं । प्रत्येक दिन समर्पित इन विशेष सेवाओं के बारे में जानकारी लेंगे, आइए ।

1. सोमवार - विशेष पूजा

तिरुमल श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी को हर सोमवार के प्रातः ६ बजे को जो प्रधान सेवा समर्पित की जाती है, उसे 'विशेष पूजा' कहते हैं। यह सेवा, संपंगि प्रदक्षिणा में स्थित कल्याण मण्ड़प में श्रीदेवी - भूदेवी समेत श्रीमलयप्प स्वामी को समर्पित होती है ।

हर सोमवार की यह सेवा अप्रैल 8, 1991 को प्रारम्भ हुई और वह बाद में आर्जित सेवा में परिणत हुई ।

मंदिर में दूसरी अर्चना और दूसरे नैवेद्य के बाद देवेरियों के साथ श्रीमलयप्प स्वामी कल्याण मण्ड़प में पधारते हैं। वैखानस आगम शास्त्र के अनुरूप होम किये जाते हैं और बाद में स्वामी को स्नपन तिरुमंजनम् सेवा समर्पित की जाती है ।

इस सेवा के भागीदार भक्तों में तीर्थ एवं प्रसाद का वितरण होता है ।

2. अष्टदल पादपद्माराधना

हर मंगलवार के प्रातः 6 बजे को दूसरी अर्चना के रूप में 108 सुवर्ण कमल के फूलों से मूलविराट को समर्पित अर्चना कार्यक्रम ही 'अष्टदल पादपद्माराधना' है ।

1984 में तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के 'स्वर्णोत्सव' के संदर्भ में यह सेवा प्रांरभ की गई थी। हैदराबाद के स्थिर निवासी, इस्लाम धर्म के अनुयायी ने इस सेवा के लिये आवश्यक 108 सुवर्ण पद्मों (कमल के फूलों) को स्वामी को भेंट के रूप में दिया। यह सेवा बाद में आर्जित सेवा में परिणत हुई ।

108 स्वर्ण पद्मों से अष्टोत्तरशतनाम के साथ जब अर्चना होती है, तब भक्तगण, भगवान के मूलविराट का नयनानंद के साथ दर्शन कर सकते हैं ।

3. बुधवार - सहस्र कलषाभिषेक

हर बुधवार के सुबह को, तिरुमल में बंगारुवाकिलि (स्वर्णद्वार) के आगे समर्पित प्रधान सेवा 'सहस्र कलषाभिषेक' है। भोग श्रीनिवास मूर्ति के साथ, श्रीदेवी - भूदेवी समेत श्रीमलयप्प स्वामी, सेनाधिपति विश्वक्सेन को सहस्र कलषाभिषेक किया जाता है ।

बंगारुवाकिलि के पास किये जाने वाले सहस्र कलषाभिषेक में, आर्जित सेवा के रूप में पैसा जमा करके भक्तगण स्वामी का दर्शन कर सकते हैं। इन सेवकों को दर्शन के साथ प्रसाद भी दिया जाता है। इस दर्शन के कारण अनेकों रूपों में आवृत्त पाप सभी धुल जाते हैं ।

4. गुरुवार (बृहस्पतिवार) - तिरुप्पावड सेवा

नेत्र दर्शन

हर बृहस्पतिवार को दूसरी अर्चना के बाद, श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी को समर्पित नैवेद्य 'तिरुप्पावड सेवा', 'अन्नकूटोत्सव' कहा जाता है ।

बृहस्पतिवार को प्रातः के 6 बजे को भगवान के मूलविराट पर अलंकृत सभी आभूषणों को उतार देते हैं। बाद में स्वामी के ललाट (मस्तक) पर शोभित त्रिपुण्ड (तिलक) को बहुत छोटा बनाते हैं, इतना छोटा कि स्वामी के नेत्र स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकें। उसके बाद स्वर्णद्वार के आगे, स्वामी के सामने पुलिहोरा (इमली चावल) को

पर्वताकार में बड़ी राशि में जमा करके रखते हैं । पुलिहोरा के साथ जलेबी भी रखते हैं और इस राशि को फूलों से सुअलंकृत करते हैं । इस पूरे को गर्भालय में विराजमान मूलविराट को नैवेद्य के रूप में समर्पित करते हैं ।

यह आर्जित सेवा है, इसलिए इस सेवा के लिये आवश्यक राशि जमा करने वालों को ही दर्शन भाग्य प्राप्त होता है । इस सेवा में वेद पण्डित, वेद पारायण के साथ श्रीनिवास गद्य का भी पठन करते हैं ।

इसके उपरांत तिरुप्पावड सेवा भक्तों के अलावा सभी भक्तगणों को श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का नेत्र दर्शन कर लेने का अवसर मिलता है ।

इस सेवा को जो भक्त कराते हैं, उनके भोजन संबंधी दोषों का परिहार होता है, साथ - ही - साथ उनके नवागत पीढ़ियों के लिए अन्नसमृद्धि भी प्राप्त होती है ।

5. पूलंगि सेवा (फूलों से सेवा)

हर बृहस्पतिवार को शाम के समय भगवान को समर्पित तोमाल सेवा को ही 'पूलंगि सेवा' कहते हैं । यह सेवा पूर्णत : एकांत में समर्पित की जाती है । जीयंगारों के द्वारा दी जानेवाली फूल मालाओं से अर्चक लोग, भगवान की मूर्ति को आपाद मस्तक अलंकृत करते हैं । इनमें सुसज्जित भगवान ऐसे दिखाई देते हैं मानों उन्होंने फूलों की अंगी (वस्त्र) पहने हुए हों । पूलंगि सेवा के बाद हर बृहस्पतिवार के रात को स्वामी को इस अलंकार में देखकर यात्रीगण पुलकित हो जाते हैं । सुगंधित पुष्पों की खुशबू फैलानेवाली इस पूलंगि सेवा के साथ अलंकृत स्वामी

का दर्शन करने पर अनेकों जन्मों के पाप, तथा आजन्मांतर की सभी वासनायें नष्ट - भ्रष्ट हो जाती हैं ।

6. शुक्रवाराभिषेक

श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के मूल विराट को, हर शुक्रवार के प्रातः 5 बजे को समर्पित अभिषेक ही शुक्रवाराभिषेक है ।

इतिहास साक्षी है कि यह अभिषेक सन् 614 के पूर्व से ही हर शुक्रवार को विशेषोत्सव के रूप में समर्पित होता था ।

कहा जाता है कि भगवद्रामानुजाचार्य ने एक शुक्रवार के दिन श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के वक्षःस्थल में ''स्वर्ण अलमेलु मंगा'' की मूर्ति को स्थापित किया और उस शुक्रवार के दिन से हर शुक्रवार को यह अभिषेक, विशेष संदर्भों के साथ किया जा रहा है ।

पुनुगु (एक विशेष प्रकार की बिल्ली से निकाला जानेवाला सुगंध द्रव्य), कस्तूरी, जव्वादि (सुगंध) आदि सुगंधित पदार्थों के साथ, आकाशगंगा से ले आये गये जल से अंदाजापूर्वक एक घण्टे तक यह अभिषेक किया जाता है । उसके बाद स्वामी के वक्षःस्थल पर विराजमान महालक्ष्मी का अभिषेक हल्दी से संपन्न होता है ।

एकदा समय में ब्रह्मादि देवताओं की प्रार्थना के परिणामस्वरूप कलियुग के मानव जाति को दर्शन देने के लिए वक्षःस्थल लक्ष्मी के साथ श्रीनिवास भगवान विराजित हुए । उसकी वास्तविक मूर्ति का दर्शन इस शुक्रवाराभिषेक के समय ही संभव होता है ।

स्वामी के अभिषेक के बाद स्वर्ण अलमेलमंगा का भी अभिषेक होता है । आर्जित सेवा के रूप में संपन्न होनेवाला यह अभिषेकोत्सव भक्तों को विशेष रूप से आकृष्ट करता है ।

अभिषेक के उपरांत सभी भक्तगणों पर उस तीर्थ को छिड़का जाता है और इसके साथ अभिषेक दर्शन (यह आर्जित सेवा) समाप्त होता है । स्वामी के शुक्रवाराभिषेक दर्शन करने पर भक्तों के समस्त पाप धुल जाते हैं, साथ ही साथ समृद्ध रूप से स्वास्थ्य, ऐश्वर्य और संपदा प्राप्त होती है ।

7. निजपाद दर्शन

हर शुक्रवार को अभिषेक के उपरांत, इस सेवा में भाग लेनेवाले सभी गृहस्थ जब दर्शन लेकर बाहर निकलते हैं, तब 'निज पाद दर्शन' प्रारंभ होता है ।

इस आर्जित सेवा के लिए टिकट लेनेवाले भक्त इस सेवा में भाग लेकर श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के निजपाद (स्वामी के पादपद्मों) माने बिना किसी आभूषणों या कवच के स्वामी के निज चरणों का दर्शन कर सकते हैं । केवल इसी दर्शन में स्वामी के निज पादों का दर्शन संभव होता है । बाकी संदर्भों में स्वामी के चरण स्वर्ण कवच से अलंकृत रहते हैं। पुराणों के पन्ने इसके साक्षी हैं कि भगवान के 'पाद दर्शन' से समस्त पाप धुल जाते हैं । इसीलिए प्रसिद्ध उक्ति 'पाददर्शनम् पापविमोचनम्' हर भक्त के लिए शिरोधार्य सूक्ति है ।

पक्षोत्सव

तिरुमल श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का हर एकादशी के दिन 'पक्षोत्सव' मनाया जाता है । लेकिन इस दिन को विशेष उत्सव या शोभायात्रा जैसे संदर्भ नहीं होने के बावजूद नैवेद्य में अन्न प्रसाद (चावल संबंधी) को कम करके, स्वामी को विशेष रूप से दोसा और सुण्ड़ल (अरअर की नमकीन) समर्पित किये जाते हैं ।

मासोत्सव (नक्षत्रोत्सव)

तिरुमल श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के आलय में, हर महीने को, कुछेक नक्षत्रों के लगनेवाले दिनों पर कुछेक विशेष उत्सव मनाये जाते हैं । इन नक्षत्रों का महीने में एक ही बार लगने के कारण, इनको मासोत्सव भी कहते हैं ।

1. रोहिणी नक्षत्रोत्सव

हर महीने, श्रीकृष्ण का जन्म नक्षत्र रोहिणी के लगने पर उस दिन के सुबह को सुप्रभात के बाद भोग श्रीनिवास मूर्ति के साथ रुक्मिणी श्रीकृष्ण का अभिषेक भी किया जाता है ।

उस दिन सन्ध्या को रुक्मिणी समेत श्रीकृष्ण, मंदिर के बाहर निकलकर आलय मण्ड़प में संपन्न होनेवाले सहस्र दीपालंकरण सेवा में विराजित होते हैं । उसके उपरांत रुक्मिणी और श्रीकृष्ण की मूर्तियाँ महाप्रदक्षिणा के मार्ग से यात्रा करके आलय के अंदर प्रवेश करती हैं । इस सेवा में रहकर दर्शन करनेवाले सभी भक्तों (जिनके नक्षत्र २७ नक्षत्रों में से एक होता है) को अपने नक्षत्रों की शांति होती है, मुख्यतया रोहिणी नक्षत्र शांति विशेष रूप से होती है ।

2. आर्द्रा नक्षत्रोत्सव

श्री भगवद्रामानुजाचार्य जी का अवतार नक्षत्र आर्द्रा है । हर महीने आर्द्रा नक्षत्र लगने वाले दिन को, सहस्रदीपालंकरण सेवा में शाम के समय श्रीमलयप्प स्वामी स्थापित होते हैं । उस विशेष दिन को एक अलग पौढ़ी पर भगवद्रामानुजाचार्य जी श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के सामने, अभिमुख होकर तिरुमल की तिरुवीथियों में शोभा यात्रा में साथ चलते हैं ।

विशेषतया आर्द्रा नक्षत्र के लगने के दस दिन पहले से भाष्यकारों के उत्सव वैभव के साथ मनाये जाते हैं । उन दिनों में स्वामी के अभिमुख होकर रामानुजाचार्य शोभा यात्रा में निकलते हैं । आलय में, भाष्यकारों की सन्निधि में स्वामी का आस्थानम् (सभा) संपन्न होता है । नैवेद्य के उपरांत श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के द्वारा पहने गये फूलों की मालायें रामानुजाचार्य को पहनाते हैं । स्वामी को आरती समर्पित करने के बाद शेषआरती (बची हुई) रामानुजाचार्य को दी जाती है । इस समय भक्तगण जब दर्शन करते हैं तो 27 नक्षत्रों (माने सभी भक्तों की) की शांति होती है, और विशेष रूप से 'आर्द्रा' नक्षत्र की शांति होती है ।

3. पुनर्वसु नक्षत्रोत्सव

श्रीराम का जन्म नक्षत्र पुनर्वसु है । हर महीने पुनर्वसु नक्षत्र के लगने के दिन सुप्रभात सेवा के उपरांत भोग श्रीनिवास मूर्ति के साथ सीता - राम - लक्ष्मण का अभिषेक होता है । श्रीरामनवमी के दिन, उसके अगले दिन यानी दशमी को बंगारुवाकिली (स्वर्ण द्वार) के पास श्रीसीता - राम - लक्ष्मण का आस्थानम् (सभा = आलय मर्यादा) होती है ।

उस दिन की संध्या को सहस्र दीपालंकरण सेवा में श्री सीताराम लक्ष्मण, आज्ञापालक हनुमान का ही दर्शन मिलता है । उसके उपरांत तिरुमल पुरवीथियों में शोभा यात्रा के बाद श्री सीता - राम - लक्ष्मण, बेड़ी आंजनेय स्वामी (मूल मंदिर के सामने स्थित हनुमान का मंदिर) के पास पहुँचने पर, श्रीराम के द्वारा पहनी गई फूल माला, बेड़ी हनुमान के गले में समर्पित की जाती है, फ़िर शेष आरती भी उतारी जाती है ।

शोभायात्रा के बाद श्री सीता - राम - लक्ष्मण आलय में प्रवेश करते हैं । इस सेवा में स्वामी का दर्शन करनेवाले समस्त नक्षत्रों के

जन्मधारी की नक्षत्र शांति होती है, और विशेष रूप से 'पुनर्वसु' नक्षत्र की शांति होती है ।

4. श्रवणा नक्षत्रोत्सव

श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का अवतार नक्षत्र श्रवणा है । उस दिन के प्रातःको, भोग श्रीनिवास मूर्ति के साथ दोनों देवेरियों एवं श्री मलयप्प स्वामी का अभिषेक होता है । सभी सेवाओं को प्राप्त करने के बाद, संध्या के सहस्र दीपालंकरण सेवा में श्रीमलयप्प स्वामी स्थापित होते हैं और उसके उपरांत तिरुमल की पुरवीथियों में शाभा यात्रा पूरा करके आलय में प्रवेश करते हैं ।

तिरुमल में किन्हीं महीनों में श्रवणा नक्षत्र के दिन विशेष उत्सव मनाये जाते हैं । हर कन्यामास के श्रवणा नक्षत्र के दिन ब्रह्मोत्सव समाप्त होते हैं । महीने के श्रवणा नक्षत्र के दिन स्वामी का पुष्पयाग उत्सव मनाते हैं । श्रवणा नक्षत्र के दिन सहस्र दीपालंकरण सेवा के उपरांत मलयप्प स्वामी पुरवीथियों में शोभायात्रा के लिये निकलते हैं ।

5. पुन्नमि गरुड सेवा (पुन्नमि = पूर्णिमा)

मात्र नक्षत्रोत्सव ही नहीं, बल्कि हर पूर्णिमा दिन के रात को, तिरुमलै स्वामी की 'पुन्नमि गरुड सेवा' संपन्न होती है । पूर्णिमा की रात के 7 बजे को वज्रकवच, वज्रमुकुट, आदि से सर्वाभरण भूषित होकर श्रीमलयप्प स्वामी स्वर्ण गरुड़ पर आरुढ़ होकर, छत्र - चामर, गज, अश्व, वृषभ आदि आलय मर्यादा के साथ पुरवीथियों में विहार करते दर्शन प्रदान करते हैं ।

संवत्सरोत्सव (वार्षिकोत्सव)

सप्तगिरीश को वर्ष में एक ही बार, विशेष दिनों में विशेष उत्सव मनाते हैं। वार्षिकोत्सव नामधारी उन पर्वों का संक्षेप में जानकारी प्राप्त करेंगे.....

1. कोइल आल्वार तिरुमंजनम्

कोइल तमिल शब्द है जिसका अर्थ मंदिर है। आल्वार, भगवान में ऐक्य हुआ भक्त है। जिस भांति भगवान को भक्त अपने हृदय में प्रतिष्ठित करता है, उसी प्रकार मंदिर में भगवान को प्रतिष्ठित करते हैं। इसीलिये मंदिर को कोइल आल्वार कहते हैं। तिरुमज्जन शब्द, तिरुमंजनम् में परिणत हुआ। तिरु = श्री, मज्जनम् = स्नान, नहाना = मंगल स्नान। पूरे मंदिर की शुद्धि ही इसका मूल अर्थ है। स्वामी के आलय का वर्ष में चार बार तिरुमंजनम् होता है। 'उगादि' (तेलुगु भाषियों का नववर्ष पर्व) से पहले, 'आनिवार आस्थानम्' से पहले, 'ब्रह्मोत्सव' से पहले, वैकुंठ एकादशी के पहले आनेवाले मंगलवार के दिन, स्वामी के आलय को पूर्णतया साफ़ करना कोइल आल्वार तिरुमंजनम् है। इसे एक महायज्ञ की भांति करते हैं।

गर्भालय के सभी उत्सव मूर्तियों को, स्वर्ण तथा चांदी के बर्तनों को स्वर्ण द्वार तक ले आते हैं। गर्भालय के सभी दीवार, छत, सभी को धोकर साफ़ करते हैं। इसी प्रकार तिरुमल पहाड़ के सभी मंदिरों को साफ़ करते हैं।

उसके बाद, 'परिमल' (सुगंधित पदार्थों) का आलय के दीवारों पर लेपन होता है। खड़िया प्रस्तर, श्रीचूर्ण, कपूर, चंदन का चूर्ण, कुंकुम,

खिचिली पत्थर - इनके मिश्रण को 'चूर्ण' कहते हैं। इस सुगंधित लेह्य को दीवारों पर लगाते हैं।

इसे आजकल आर्जित सेवा बनाया गया है। समस्त पुण्यक्षेत्रों को साफ़ करने पर जो पुण्य मिलता है, उतना पुण्य इसमें भाग लेनेवाले गृहस्थों को मिलता है।

2. उगादि आस्थानम्

हर वर्ष, उगादि के दिन, तेलुगु भाषियों के कुलदेवता जो श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी हैं, उनका 'उगादि आस्थानम्' होता है। उस दिन सुबह को पहली घंटी तथा नैवेद्य के उपरांत, श्री मलयप्प स्वामी, अपनी दोनों देवेरियों के साथ सर्वभूपाल वाहन पर आरुढ़ होकर स्वर्ण द्वार के सामने स्थापित होते हैं। वेङ्कटेश्वर स्वामी के सेनापति विश्वक्सेन, दक्षिण दिशा की ओर अभिमुख होकर विराजित होते हैं।

विशेष मखमल वस्त्रों का समर्पण, नैवेद्य के बाद अक्षतारोहण और उसके उपरांत पंचांग श्रवण होता है। उस दिन की तिथि, वार, नक्षत्र के साथ उस विशेष वत्सर (वर्ष) के परिणाम (फ़ल), देश - काल - वातावरण आदि का पंचांग विवरण श्रीनिवास को सुनाया जाता है।

अंततोगत्वा कर्पूर नीराजन समर्पण के बाद चरणामृत एवं प्रसाद का वितरण होता है।

3. श्रीराम नवमी आस्थानम्

हर वर्ष के चैत्र शुद्ध नवमी के दिन स्वर्ण द्वार के आगे श्रीराम का आस्थानम् (सभा) संपन्न होता है। उस दिन शाम को हनुमद्वाहन पर वेङ्कटेश्वर स्वामी की शोभा यात्रा होती है। उसके उपरांत स्वर्ण द्वार के

पास सर्वभूपाल वाहन में विराजमान श्री सीता - राम - लक्ष्मण, हनुमान की सभा (आस्थानम्) एवं नैवेद्य, अक्षतारोहण होता है । उसके बाद श्रीरामायण से श्रीराम के जन्म वृत्तांत का प्रवचन होता है । मंगल नीराजन के साथ पट्टाभिषेक की परिसमाप्ति होती है । तीर्थ एवं प्रसाद का वितरण भी होता है ।

4. श्रीराम पट्टाभिषेक

हर वर्ष, चैत्र शुद्ध दशमी की संध्या को तिरुमल की पुरवीथियों में श्रीसीता-राम-लक्ष्मण की ओर देखते हुए अलग पालकी में हनुमान भी शोभा यात्रा के लिए निकलते हैं ।

बाद में स्वर्णद्वार के पास श्रीसीता-राम-लक्ष्मण, इनके बगल में अलग-अलग पौढ़ियों पर सुग्रीव, अंगद और हनुमान को बिठाया जाता है और सभा (आस्थानम्) होती है । अक्षतारोहण, नैवेद्य के बाद श्रीराम के जन्म से लेकर पट्टाभिषेक तक की कथा का प्रवचन किया जाता है । मंगल नीराजन के साथ पट्टाभिषेक परिसमाप्त होती है । तीर्थ एवं प्रसाद का वितरण भी होता है ।

5. वसंतोत्सव

हरेक वर्ष को, तिरुमल में, चैत्र पूर्णिमा के तीन दिन पहले से लेकर, वार्षिक वसंतोत्सव मनाया जाता है जो पूर्णिमा के दिन समाप्त होता है ।

चैत्र शुद्ध त्रयोदशी के सुबह को श्रीदेवी - भूदेवी समेत श्रीमलयप्प स्वामी आलय के वसंत मण्ड़प में आते हैं, वहाँ, वसंतोत्सव, अभिषेक,

नैवेद्य तथा आस्थान संपन्न होते हैं । तदुपरांत उत्सव मूर्तियाँ आलय में प्रवेश करती हैं ।

दूसरे दिन, श्रीमलयप्प स्वामी का स्वर्ण रथोत्सव कार्यक्रम होता है, फ़िर पूर्व दिन की भांति वसंतोत्सव मण्ड़प में वसंतोत्सव होता है ।

तीसरे दिन श्रीमलयप्प स्वामी के साथ, अलग - अलग पालकियों में रुक्मिणी - श्रीकृष्ण, श्रीसीता-राम-लक्ष्मण भी वसंत मण्ड़प में यात्रा करते हुए पहुँचते हैं, वसंतोत्सव संपन्न होने के बाद मंदिर के अंदर प्रवेश करते हैं ।

यह आर्जित सेवा है और इसलिये भक्तगण इसमें भाग ले सकते हैं । वसंतोत्सव करनेवाले भक्तों के समस्त रोग निवृत्त हो जाते हैं और उनको स्वास्थ्य की सिद्धि होती है ।

6. पद्मावती परिणयोत्सव

वैशाख शुद्ध दशमी को पद्मावती - श्रीनिवास का परिणयोत्सव दिन माना जाता है । सन् 1992 से तिरुमल में परिणयोत्सव के संदर्भ में तीन दिनों के लिये उत्सव मनाये जा रहे हैं ।

इसके पूर्व दिन यानी वैशाख शुद्ध नवमी के दिन, शाम को श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी गजवाहन पर आरुढ़ होकर, श्रीदेवी-भूदेवी पालकी में आरुढ़ होकर, शोभा यात्रा के लिये निकलते हैं और नारायणगिरि उद्यान पहुँचते हैं, वहाँ परिणयोत्सव के परंपरागत उत्सव बड़े पैमाने में मनाये जाते हैं । संगीत सभा के उपरांत श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी दोनों देवेरियों के साथ आलय प्रवेश करते हैं ।

दूसरे दिन माने वैशाख शुद्ध दशमी के दिन वेङ्कटेश्वर स्वामी अश्ववाहन पर, तीसरे दिन माने वैशाख शुद्ध एकादशी को गरुड़ वाहन पर आरुढ़ होते हैं, दोनों देवेरियाँ पालकी पर आरुढ़ होती हैं । नारायणगिरि उद्यान में पहले दिन की भांति दूसरे और तीसरे दिन को परिणयोत्सव मनाया जाता है । श्रीपद्मावती परिणयोत्सव को देखनेवाले भक्तों के गृहों में विवाहादि शुभ कार्य संपन्न होते हैं और वे भी बड़े पैमाने पर संपन्न होते हैं ।

पैसे चुकाकर भक्तगण इस आर्जित सेवा के भागीदार बन सकते हैं ।

7. ज्येष्ठाभिषेक

हरेक वर्ष के ज्येष्ठ मास में, ज्येष्ठा नक्षत्र के लगने से पहले के तीन दिनों के लिये तिरुमल श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का, संपंगि प्रदक्षिणा के कल्याण मण्ड़प में ज्येष्ठाभिषेक किया जाता है । इसी को 'अभिधेयक अभिषेक' भी कहते हैं ।

कई पीढ़ियों से श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के जिन प्राचीन उत्सव मूर्तियों का अभिषेक हो रहा है, वे उत्सवमूर्ति घिस न जाये, इसके निमित्त यह उत्सव मनाया जाता है । यह तीन दिनों के लिये मनाया जाता है ।

पहले दिन, श्रीमलयप्प स्वामी का स्वर्ण कवच उतार दिया जाता है । होम, अभिषेक, पंचामृत स्नपन तिरुमंजन आदि को समर्पित करने के बाद, स्वामी को वज्रकवच से अलंकृत करके पुरवीथियों में शोभा यात्रा के लिये ले आते हैं ।

उसी क्रम से दूसरे दिन उत्सव मूर्ति को मोती - कवच से अलंकृत करके शोभा यात्रा कराते हैं । तीसरे दिन तिरुमंजन आदि पूरा करके

पुनः स्वर्ण कवच समर्पित करके शोभा यात्रा करते हैं । इस स्वर्ण कवच को अगले ज्येष्ठाभिषेक के संदर्भ में ही निकालते हैं । तब तक पूरे वर्ष के लिये बालाजी भगवान स्वर्ण कवच से ही अलंकृत रहते हैं ।

आर्जित सेवा के रूप में संपन्न होनेवाले इस उत्सव में भक्तगण भाग ले सकते हैं । वेङ्कटेश्वर स्वामी, कवच की भाँति इस सेवा के भागीदारों की रक्षा करते हैं ।

8. आणिवार आस्थानम्

हर वर्ष, दक्षिणायन के पुण्यकाल में, कर्काटक संक्रांति के दिन तिरुमल में ''आणिवार आस्थानम्'' नामक उत्सव मनाया जाता है । तमिल भाषियों के आणि महीने के अंतिम दिन को आस्थान (सभा) होने के कारण इसे 'आणिवार आस्थानम्' कहा जाता है । हर वर्ष के जुलाई महीने के 16 तारीख को यह उत्सव मनाया जाता है ।

पुराने समय में, देवस्थानम् के आय - व्यय, बचत आदि का वार्षिक हिसाब इसी 'आणिवार आस्थानम्' के दिन प्रारंभ होता था । लेकिन वर्तमान समय में वार्षिक बजट अप्रैल को बदला दिया गया । फ़िर भी यह उत्सव पूर्वसमय की भांति आज भी मनाया जा रहा है।

आज के दिन स्वर्ण द्वार के आगे, श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्रीमलयप्प स्वामी सर्वभूपाल वाहन पर आकर विराजमान होते हैं । अलग पालकी में विश्वक्सेन को भी वहाँ ले आते हैं, और वहाँ बड़े पैमाने में वस्त्र समर्पण, नैवेद्य, समर्पित किये जाते हैं । अक्षतारोपण के उपरांत देवस्थानम् के कार्यनिर्वहरणाधिकारी को चाबी का गुच्छा समर्पित करके

आरती और शठारी दिया जाता है । उसके बाद प्रसाद का वितरण करते हैं ।

स्वर्ण चौखट के आगे संपन्न होनेवाले आणिवार आस्थानम् में केवल अर्चक स्वामी, जिय्यंगार स्वामी लोग, अधिकारीगण, देवस्थानम् के कर्मचारी ही भाग लेते हैं ।

9. पुष्प पल्लकी

जुलाई 16 को आणिवार आस्थानम् के संदर्भ में, उस दिन के शाम को तिरुमल की पुरवीथियों में श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्रीमलयप्प स्वामी का पुष्प पल्लकी (पल्लकी = पालकी) में शोभा यात्रा निकालते हैं । विविध प्रकार की फूल मालाओं से सुअलंकृत पुष्प पल्लकी में श्रीदेवी-भूदेवी समेत मलयप्प स्वामी का तिरुवीथी उत्सव दर्शनीय उत्सव है, शब्दों से इसका वर्णन करना असाध्य ही है । इस आर्जित उत्सव में पैसे जमा करके भक्तगण उत्सव के भागीदार बन सकते हैं । इस सेवा को कराने से या मात्र पुष्प पल्लकी का दर्शन करने से पिछले जन्म की सारी वासनायें नष्ट हो जाती हैं, तथा वर्तमान में शांति प्राप्त होती है ।

10. पवित्रोत्सव

वैदिक सम्प्रदाय के अनुसार जन्मशौच (जिनके घर में बच्चा पैदा हुआ हो, उनको दस दिनों के लिये मंदिर प्रवेश मना है) या मृताशौच (जिनके घर में किसी की मृत्यु हुई हो, उनको बारह दिनों के लिये मंदिर में प्रवेश करना मना है, क्योंकि उनको सूतक होता है) के समय मंदिर जाना मना है । मंदिर की पवित्रता में लोप नहीं हो, जाने-अनजाने होनेवाले दोषों के परिहरणार्थ, जो कार्यक्रम किया जाता है, वह

'पवित्रोत्सव' है । ये पवित्रोत्सव आलयशुद्धि और पुण्याहवाचन मात्र के लिये नहीं होते । संप्रोक्षण से भिन्न जो क्रिया कलाप होते हैं, उससे युक्त कार्यक्रम ही यह पवित्रोत्सव है ।

इतिहास साक्षी है कि ये पवित्रोत्सव 15 वीं - 16 वीं शती तक मनाये जा रहे थे । अकारणवश रुकी इन उत्सवों को 1962 से देवस्थानम्, पुनरुद्धरण करके, इनको मना रही है । यह तीन दिनों का कार्यक्रम है ।

हर साल के सावन (श्रावण) मास के शुद्ध दशमी, एकादशी तथा द्वादशी को कल्याण मण्ड़प में इस उत्सव को मनाया जाता है ।

पहले दिन पवित्रों (जनेउओं) की प्रतिष्ठा, होम और देवेरियों के साथ मलयप्प स्वामी के अभिषेक किये जाते हैं । दूसरे दिन आलय और उसके परिसर आलयों में स्थापित मूर्तियों को पवित्र (जनेऊ) समर्पित किये जाते हैं । तीसरे दिन पूर्णाहुति होती है । तीनों दिन, शाम को पूजा के उपरांत शोभा यात्रा भी संपन्न होती है ।

इस आर्जित सेवा में पैसा जमा करके भक्त लोग भाग ले सकते हैं । इसमें भाग लेनेवाले भक्तों के वंश में जिस किसी ने भी जाने - अनजाने कोई देवता के प्रति अपराध कर गया हो, तो उनका निवारण हो जाता है । इसके कारण सुख - शांति प्राप्त होते हैं ।

11. श्रीकृष्णाष्टमी

कृष्णाष्टमी को, रात में, तोमाल सेवा के उपरांत स्वर्ण चौखट के पास श्रीकृष्ण का तिरुमंजनम् (अभिषेक) किया जाता है । उसी समय, अलग तख्ते पर श्रीदेवी-भूदेवी समेत उग्र श्रीनिवास मूर्ति को स्थापित

किया जाता है और द्वादश तिरुवाराधना की जाती है । ये अभिषेक एकांत में किये जाते हैं । तदुपरांत, उग्र श्रीनिवास मूर्ति को आनंद निलय में भेजे जाने के बाद श्रीकृष्ण की आस्थान (सभा) की जाती है । शैय्या पर लेटे हुए बालकृष्ण के रूप में दिखाई देनेवाले स्वामी को नैवेद्य समर्पित किया जाता है, बाद में अक्षतारोपण होता है ।

उसके बाद, श्रीमद्भागवत् के कृष्णावतार संबंधी पुराण का पठन होता है । आरती के साथ सभा समाप्त होती है ।

अगले दिन, प्रातःकाल को बालकृष्ण की शोभा यात्रा निकालते हैं और उस समय बालकृष्ण के सिर पर लगाये तेल को भक्तों में बांटते हैं । भक्तगण उस तेल को अपने सिर पर लगाकर मंगल स्नान करते हैं ।

मध्याह्न के समय, श्रीमलयप्प स्वामी के साथ अलग पालकी पर मक्खन को हाथ में धारण करने वाले कृष्ण, तिरुमल की पुरवीथियों में शोभा यात्रा के लिये निकलते हैं और तभी उट्ल उत्सव (मट्का फ़ोड़ना) मनाया जाता है । मट्का फ़ोड़ने का पर्व तिरुमल में पग - पग पर मनाया जाता है । भगवान का आलय में प्रवेश के साथ कृष्णाष्टमी पर्व समाप्त होती है ।

12. ब्रह्मोत्सव

पूरे वर्ष के दौरान सप्तगिरिवासी के कई उत्सव मनाये जाते रहते हैं, लेकिन वर्ष में एक बार, नौ दिनों के लिये मनाये जानेवाले ब्रह्मोत्सव तिरुमल के इतिहास में अत्यंत प्रसिद्धि प्राप्त कर गई ।

ब्रह्मादि देवताओं की माँग के कारण कलियुग के प्राणि कोटि की रक्षा हेतु 'कलौ वेङ्कटनायकः' उपाधि प्राप्त, श्रीवेङ्कटेश्वर नाम से स्वयंभू शालग्राम मूर्ति बनकर कन्यामास के श्रवणा नक्षत्र के लगने पर इस प्रसू पर अवतरित हुए । ब्रह्मदेव ने इस संदर्भ में उत्सव मनाना प्रारंभ किया, जो नौ दिन पहले शुरु होकर स्वामी के आविर्भाव के दिन समाप्त होते हैं । ब्रह्म के द्वारा किये जाने के कारण इन्हें 'ब्रह्मोत्सव' कहा गया और साक्षात् ब्रह्म स्वरूपी श्रीवेङ्कटेश्वर के लिये मनाये जाने के कारण 'ब्रह्मोत्सव' नाम से प्रसिद्धि पाई ।

ब्रह्म के द्वारा प्रारंभ किये गये ब्रह्मोत्सव, कालक्रम में अनेक राजाओं के द्वारा आगे बढ़ाया गया और मनाया गया ।

सन् 614 में पल्लव रानी 'सामवै' ने भोग श्रीनिवास मूर्ति को भेंट दिया और कन्यामास में मनाये जानेवाले ब्रह्मोत्सव से पहले इसको शोभा यात्रा में निकलवाने की आज्ञा दी ।

इतिहास यह कहता है कि सन् 1244 में, चैत्र मास में तेलुगु पल्लवराज विजयगंड गोपालदेव ने, सन् 1328 में, आषाढ़ के महीने में 'आडि तिरुनाल्ल' नाम से त्रिभुवन चक्रवर्ति तिरुवेंकटनाथ यादवरायलु ने, सन् 1429 में आश्वयुज महीने में वीरप्रताप देवरायलु ने, सन् 1446 में 'मासतिरुनाल्ल' से हरिहर रायलु ने, सन् 1530 में 'अच्युतराय ब्रह्मोत्सव' नाम से अच्युतरायलु ने, ब्रह्मोत्सवों को मनाया और सन् 1583 तक आते - आते इस प्रकार के ब्रह्मोत्सव पूरे वर्ष में, हर महीने में एक बार मनाये जाने लगे ।

कालांतर में उन राजाओं और उनके राज्यों की भांति उनके द्वारा मनाये गये उत्सव भी समाप्त हो गये । लेकिन मात्र ब्रह्म के द्वारा प्रारंभ

किये गये उत्सव आज भी बड़े पैमाने में मनाये जा रहे हैं। यह ब्रह्मोत्सव नौ दिनों के लिये मनाया जाता है ।

ब्रह्मोत्सव के प्रारंभ के पहले दिन, शाम को अंकुरार्पण, श्रीहरि के सेनाधिपति विश्वक्सेन के पर्यवेक्षण में मिट्टी का संग्रहण, अंकुरार्पण कार्यक्रम, शुरु होता है । अगले दिन माने ध्वजारोहण के दिन स्वर्ण ध्वज स्तम्भ पर गरुड़ांकित ध्वज को फ़हराया जाता है और समस्त लोकों के प्राणियों को स्वागत दिया जाता है। उस रात को श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का 'महाशेषवाहन' पर शोभायात्रा होती है। ध्वजारोहण के दिन आंध्रप्रदेश सरकार के अधिकारीगण श्रीहरि को रेशमी वस्त्र समर्पित करते हैं ।

दूसरे दिन प्रातः लघुशेषवाहन, शाम को हंसवाहन, तीसरे दिन सुबह सिंहवाहन एवं शाम को मुत्यप्पंदिरी (मोतियों से सुसज्जित पालकी), चौथे दिन को कल्पवृक्षवाहन तथा शाम को सर्वभूपालवाहन पर, पांचवे दिन के प्रातः समय गजदंत पालकी में मोहिनी अवतार के रूप में बालाजी भगवान शोभा यात्रा के लिए निकलते हैं। उसी दिन रात को गरुड़ोत्सव मनाया जाता है। श्री विल्लिपुत्तूर से गोदादेवी के द्वारा पहने गये फूलमाला तथा मद्रास (चेन्नै) से नये छत्र (छाते) तिरुमल में आते हैं। गोदा देवी के गले से उतारी गई फूलमालाओं को धारण करके मलयप्प स्वामी गरुड़ पर आरुढ़ होकर शोभायात्रा के लिये निकलते हैं। लाखों की संख्या में भक्तगण गरुड़ोत्सव में भाग लेते हैं और स्वामी का दर्शन करते हैं ।

छटवें दिन प्रातः को हनुमंतवाहन, शाम को गजवाहन, सातवें दिन प्रातः को सूर्य प्रभावाहन, शाम को चंद्रप्रभावाहन, आठवें दिन प्रातः को

रथोत्सव एवं शाम को अश्ववाहन निकाले जाते हैं। नवें दिन को चक्र स्नान मनाया जाता है। उस दिन रात को ध्वजावरोहण का कार्यक्रम चलाया जाता है ।

जिस वर्ष में अधिकमास का आगमन होता है, तिरुमलेश के दो ब्रह्मोत्सव मनाये जाते हैं - पहला, कन्यामास का वार्षिक ब्रह्मोत्सव और दूसरा नवरात्रि (दशहरा) के समय का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव ।

13. दीवाली आस्थान

दीवाली पर्व के दिन स्वर्ण द्वार के आगे श्रीमलयप्प स्वामी का आस्थान (सभा) संपन्न होता है ।

आलय में यथाक्रम से पहली घण्टी तथा नैवेद्य की समाप्ति पर स्वर्ण द्वार के आगे सर्वभूपालवाहन पर श्रीदेवी-भूदेवी समेत मलयप्प स्वामी आकर स्थापित होते हैं। एक अलग तख्ते पर विश्वक्सेन को स्थापित करने के बाद बड़े पैमाने में वस्त्रसमर्पण एवं नैवेद्य समर्पित करके, अक्षतारोपण करते हैं। अंत में आरती उतारने के बाद तीर्थ, चंदन एवं शठारी का वितरण होता है और इसके साथ दीवाली की सभा समाप्त होती है ।

14. पुष्पयाग

हर वर्ष, ब्रह्मोत्सव की समाप्ति के बाद कार्तिक मास के श्रवणा नक्षत्र के दिन श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्री मलयप्प स्वामी का 'पुष्पयाग' पर्व मनाया जाता है। 15 वीं शताब्दी तक तिरुमल में यह कार्यक्रम चलाया जा रहा था लेकिन किसी कारणवश वह अचानक रुक गया। 1980, नवंबर 14 से तिरुमल-तिरुपति-देवस्थानम्, पुनः इस कार्यक्रम का उद्धार करके, फ़िर से पुष्पयाग चला रहा है ।

पुष्पयाग जिस दिन को मनाया जाता है, उस दिन को यथाक्रम से स्वामी के दूसरी अर्चना एवं दूसरे नैवेद्य के बाद श्रीदेवी-भूदेवी समेत मलयप्प स्वामी कल्याण मण्ड़प में आकर स्थापित होते हैं। होम और स्नपन तिरुमंजन (अभिषेक) समर्पित किये जाते हैं। दोपहर के समय अनेक प्रकार के सुगंधित पुष्पों से श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी की पुष्पार्चना होती है। फूलों की ढ़ेर स्वामी के वक्षःस्थल तक पहुँचने के बाद, इन फूलों को निकालते हैं। दोबारा पुष्पार्चना की जाती है। इस प्रकार 20 बार अर्चना की जाती है। उसके उपरांत बड़े पैमाने में आरती उतारी जाती है।

आर्जित सेवा के रूप में चलाये जानेवाले पुष्पयाग में भक्तगण पैसे चुकाकर भागीदार बन सकते हैं। जनश्रुति है कि इसमें भाग लेने वाले भक्तों के पूर्व जन्मों की वासनायें नष्ट होती हैं तथा समस्त रोगों का नाश होता है। इसके परिणामस्वरूप सुख एवं शांति के साथ जीवन आगे प्रवृद्ध होती है।

15. धनुर्मास - तिरुप्पावै

पूरे वर्ष में, तिरुमल में, श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी को 'सुप्रभात सेवा' समर्पित की जाती है। लेकिन धनुर्मास में, पूरे एक महीने में सुप्रभात सेवा के स्थान पर 'तिरुप्पावै' का पठन होता है।

गोदादेवी ने अपने को द्वापर की गोपबाला मानकर, जिन 30 पाशुरों को गाया, उनको तीस दिनों में, यानी एक दिन में एक पाशुर के हिसाब से गाकर स्वामी को सुनाते हैं। इस संदर्भ में भोग श्रीनिवास मूर्ति के साथ मक्खनधारी कृष्ण को भी एकांत सेवा समर्पित की जाती है। तिरुप्पावै का पठन एकांत में ही किया जाता है।

इस धनुर्मास में श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी की सहस्रनामार्चना करते समय तुलसी पत्रों के बदले बिल्व पत्रों का उपयोग करते हैं।

16. वैकुंठ एकादशी

धनुर्मास के शुद्ध एकादशी को वैकुंठ एकादशी कहते हैं। वैकुंठ एकादशी के दिन प्रातः काल के समय तिरुमल के वैकुंठ द्वार खोल दिया जाता है और द्वादशी के प्रातः काल को बंद किया जाता है। वैकुंठ एकादशी के दिन श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्रीमलयप्प स्वामी सर्वाभरणों से सुअलंकृत होकर तिरुमल की तिरुवीथियों में स्वर्णरथ पर शोभायात्रा के लिये निकलते हैं, उसके उपरांत आलय प्रवेश करते हैं। बाद में आस्थान (सभा) संपन्न होता है।

17. गोदापरिणयोत्सव

धनुर्मास के अंतिम दिन, यानी कनुम पर्व के दिन (तीन दिनों के पर्व में पहला दिन भोगी है, दूसरा दिन संक्रांति है और तीसरा दिन कनुम है) श्रीहरि के वक्षःस्थल लक्ष्मी को गोदादेवी मानकर गोदा परिणयोत्सव मनाया जाता है। उस दिन तिरुपति में स्थित गोविन्दराज स्वामी आलय के गोदा देवी (आण्ड़ाळ) द्वारा पहने गये फूल माला को तिरुमल ले आकर श्रीहरि के गले में पहनाते हैं।

18. पारुवेट उत्सव (वेट = शिकार)

हर वर्ष, कनुम पर्व के दिन तिरुमल में पारुवेट उत्सव मनाया जाता है। उस दिन को, मंदिर में दूसरे नैवेद्य के उपरांत, श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी पंचायुधों (शस्त्रों) को धारण कर शिकार के लिये निकलते हैं। एक अलग पालकी में श्रीकृष्ण की मूर्ति भी निकलती है।

मंदिर के वायव्य कोने में मंदिर से एक मील की दूरी पर स्थित पारुवेट मण्ड़प में वेङ्कटेश्वर स्वामी जाते हैं और शाम तक वहीं रहकर, स्वामी शिकार खेलते हैं। पारुवेट मण्ड़प में भगवान श्रीहरि, ताल्लपाक वंशजों के द्वारा प्रदत्त सेवायें स्वीकार करते हैं। श्रीकृष्ण, मण्डप के बगल में स्थित गोप बालाओं के आवास में जाकर अर्चना सेवा स्वीकारते हैं।

संगीत एवं धार्मिक सेवाओं से युक्त इस पारुवेट उत्सव में असंख्य भक्त भाग लेते हैं। उस दिन शाम को स्वामी अपने मंदिर में लौटकर आ जाते हैं।

हर तीसरे साल मनाये जानेवाले नवरात्रि ब्रह्मोत्सव के उपरांत भी 'पारुवेट उत्सव' मनाया जाता है। विश्वास है कि पारुवेट उत्सव में भगवान का दर्शन करनेवालों को इंद्रिय निग्रह प्राप्त होता है।

19. रथसप्तमी

हर वर्ष को माघ शुद्ध सप्तमी 'सूर्य जयन्ती' के दिन तिरुमलै में 'रथ-सप्तमी' पर्व मनाया जाता है।

उस दिन को श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक सात वाहनों पर आरुढ़ होकर पुरवीथियों में यात्रा के लिये निकलते हैं।

सूर्यप्रभावाहन, लघुशेषवाहन, गरुड़वाहन, हनुमंतवाहन, कल्पवृक्षवाहन, सर्वभूपालवाहन, चंद्रप्रभावाहन, इन सात वाहनों में मलयप्प स्वामी भक्तों को दर्शन प्रदान करते हैं। दोपहर को चक्र स्नान संपन्न होता है। रथसप्तमी को 'अर्ध ब्रह्मोत्सव' या कभी किसी समय का (अनादि काल का) ब्रह्मोत्सव भी कहते हैं।

20. प्लवनोत्सव

हर साल को, श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी की पुष्करिणी (तालाब) में फ़ागुन के महीने में पांच दिनों के लिये (जो पूर्णिमा के पहले चार दिनों से लेकर पूर्णिमा को समाप्त होनेवाले) श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी का प्लवनोत्सव मनाया जाता है। इतिहास का कहना है कि सन् 1468 में भी प्लवनोत्सव मनाया जा रहा था। ताल्लपाक अन्नमाचार्य ने भी प्लवनोत्सव को बडे पैमाने में मनाया था। बीच में यह उत्सव बंद हो गया था। इसे पुनः सन् 1921 को प्रारंभ किया गया है।

हाल में प्लवनोत्सव जो पांच दिनों के लिये मनाये जा रहे हैं, उनमें पहले दिन माने फागुन शुद्ध एकादशी को प्लवन पर श्रीसीता-राम-लक्ष्मण, दूसरे दिन द्वादशी को रुक्मिणी-श्रीकृष्ण, जल विहार करते हैं। तीसरे दिन त्रयोदशी से लेकर पूर्णिमा के दिन तक, तीन दिनों के लिये श्रीदेवी-भूदेवी समेत मलयप्प स्वामी प्लवन पर जल विहार करते हैं।

यह आर्जित सेवा है और भक्तगण इसके लिये पैसे चुका कर भाग ले सकते हैं।

21. प्रणय कलहोत्सव

हर वर्ष को वैकुंठ एकादशी के बाद ठीक छटवें दिन को तिरुमल में प्रणयकलहोत्सव मनाया जाता है।

उस दिन को दूसरी घण्टी व नैवेद्य के बाद श्री मलयप्प स्वामी पालकी में बैठकर महाप्रदक्षिणा के मार्ग से होकर स्वामी पुष्करिणी के पास जैसे ही पहुँचते हैं, वहाँ, उसी समय को, दोनों देवेरियाँ अलग -

अलग पालकियों में विराजित होकर अप्रदक्षिणा करती हुई स्वामी के सामने पड़ जाती हैं । इस पुण्य समय में पुराण का पठन होता है । शिकार खेलकर लौटनेवाले स्वामी पर देवेरियाँ प्रहार करती हैं । तब वेङ्कटेश्वर स्वामी भय खाने जैसा संकेत कर दोनों देवेरियों से मिन्नत मांगने लगते हैं कि मैं ने कोई अपराध नहीं किया । उसके उपरांत देवेरियाँ शांत हो जाती हैं और दोनों ओर विभूषित होकर स्वामी के साथ कर्पूर आरती स्वीकार करके मंदिर में जाती हैं । वहाँ आस्थान (सभा) संपन्न होता है ।

22. अध्ययनोत्सव

वैकुंठ एकादशी के पहले के 11 दिनों से प्रारंभ होकर 25 दिनों तक संपन्न होनेवाले अध्ययनोत्सव में विशेष रूप से दिव्य प्रबंधों का पारायण होता है ।

अंतिम दिन 'तण्णीरमुदु उत्सव' मनाया जाता है । 'तिरुमलनंबी' को दादा ! दादा ! पुकारते हुए निषाध के रूप में आये श्रीनिवास ने पानी पी थी । इस घटना के स्मरण में यह उत्सव मनाया जाता है । मात्र इस संदर्भ में ही नहीं बल्कि तिरुमल श्रीहरि के अनेक उत्सवों में दिव्य प्रबंधों के पारायण का संप्रदाय भगवद्रामानुज ने स्थापित किया ।

उपर्युक्त उत्सवों के साथ-साथ नरसिंह जयन्ती, श्रीवराह जयन्ती, अनंत पद्मनाभ चतुर्दशी, चक्रतीर्थ मुक्कोटि, कैशिक द्वादशी, कार्तिक दीपोत्सव, क्षेत्रपालक उत्सव, तिरुवाडिपूरम् उत्सव, श्रीवारि बाग सवारि उत्सव, पुरिषैतोट उत्सव जैसे वार्षिक उत्सव भी तिरुमल के श्रीहरि आलय में मनाये जाते हैं ।

सृष्टिकर्ता ब्रह्मदेव से लेकर साधारण व्यक्ति तक श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के उत्सव, शोभायात्रायें, अर्चना, आराधना, सेवायें.... इत्यादि अपनी-अपनी रुचि के अनुसार भरपूर मन से सेवायें समर्पित करते हैं । आनंदपूर्वक मनौतियां समर्पित करते हैं । तिरुमल क्षेत्र में हर समय कोई न कोई वैभव चालू रहता ही है । इसीलिये सर्व देवताओं के लिये, सिद्ध पुरुषों के लिये, परमयोगियों के लिये, साधकों के लिये आधार बनकर निरंतर, निर्विराम रूप से भक्तगणों के समूहों से यह क्षेत्र 'नित्यकल्याण हरित तोरण' (नित्यप्रति विवाह का संदर्भ इसलिये नित्य प्रति मंगल तोरण समर्पण) जैसे भासित होता रहता है ।

साल भर में सप्तगिरीश को अंदाजापूर्वक 400 से भी अधिक सेवायें, छोटे-बडे, सभी को दर्शन प्राप्ति के योग्य, या जिन सेवाओं को सभी भक्त देख नहीं पाते, ऐसी कई सेवायें समर्पित की जा रही हैं । तिरुमल क्षेत्र में नित्यप्रति पर्व होता है । हर समय खीर और हर समय मिष्ठान्न समर्पण होता ही रहता है ।

कहा जाता है कि आनंद निलयवासी उत्सव प्रिय हैं । उससे भी ज्यादा भक्तप्रिय हैं । उस स्वामी में जो भक्त वात्सल्य विद्यमान है, जो भक्त प्रियत्व विद्यमान है, उसका अंदाज लगाना असाध्य ही है ! भगवान के दर्शनार्थ जो भी भक्त आता है, उससे उत्सव करवा लेता है बालाजी भगवान ! मनौतियाँ समर्पित करवा लेता है ! शोभा यात्रायें करवा लेता है ! उसके उत्सव एवं यात्रायें करनेवाले भक्तों को कल्याण परंपरा एवं शुभ परंपरा प्रदान करता है । उत्सव नहीं मना पायेंगे, तब भी ठीक है ! उस पर्वतवासी के असीम वैभव, असाधारण रूप से संपन्न होनेवाले उत्सव को हम देखते हैं, तो पर्याप्त है ! समस्त पाप धुल जाते

हैं । सारी इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है !!! आनंद निलयवासी का मनःचक्षुओं से दर्शन करेंगे तो पर्याप्त है ! असीम ब्रह्मानंद की अनुभूति होती है ।

इसके अलावा इस मानव जन्म के लिये और क्या ही चाहिए ? इसलिये 'उत्सव-देव-वेङ्कटेश्वर' रूप से प्रसिद्ध सप्तगिरीश के उत्सव करायेंगे तो पर्याप्त है ! उनको देखेंगे, तब भी पर्याप्त है !! अगर उनका स्मरण करेंगे, तब भी पर्याप्त है !! हमारा जन्म चरितार्थ हो जाता है ! हमारा वंश भी धन्य हो जाता है !!!

समर्पण

'चेडनीक ब्रतिकिंचे सिद्ध मंत्रमू !' (बिगडने से बचाकर उद्धार करनेवाला, सिद्धि प्राप्त करानेवाला मंत्र), 'रोगालड़ची रक्षिंचे दिव्यौषधमू!' (समस्त रोगों को नष्ट करके रक्षा करने वाला, दिव्य औषध है), 'बड़िबायक वेण्टतिरिगे प्राणबंधुवु' (बिना थकान के हमारे साथ संचार करनेवाले प्राणबंधु है) । हमारे तेलुगु भाषियों के 'कुलदैव' सघन वेङ्कटप्रभु के दिव्य पादपद्मों पर यह छोटी पुस्तिका सुमन समर्पित है ।

इसका नायक श्रेष्ठ, सप्तगिरीश ही है ! इसके सारे विषय उसी सघन वेङ्कटेश्वर के हैं ! इसका सर्वस्व उस सप्तगिरीश का ही है ! और यह बालक (रचनाकार बालसुब्रह्मण्यम्) भी बालाजी की संस्था से संबद्ध ही है ! इस प्रकार जब सब कुछ स्वामी का ही है, तो स्वामी की चीज़ को स्वामी को समर्पित करने में क्या ही बढ़िया बात है ?

केशव दासिनैति गेलिचिति वन्निटानु
ई शरीरपु नेरालिक नेल वेदक? ।।टेक।।

निच्चलु कोरिकलिय्य नी नाममे चालु
तेच्चि पुनीतु चेय नी तीर्थमे चालु
पच्चि पापा लणच नी प्रसादमे चालु
येच्चुकोन्दु उपायालु इक नेल ।।केशव।।

घनुनि चेयगनु नी कैंकर्यमे चालु
मोनसि रक्षिंचनु नी मंत्रमे चालु
मनिपि कावग तिरुमणि लांछनमे चालु
येनसेनु दिक्कुदेस इक नेल वेदक ।।केशव।।

नेलवैन सुखमिय्य नी ध्यानमे चालु
अल दापुदण्डकु नी यर्चने चालु
इलपै श्री वेङ्कटेश ! इन्निटा माकु कलवु
येलमि नितरमुलु इक नेल वेदक ।।केशव।।

''ओम् नमो वेङ्कटेशाय''

केशव का दास बन गया मैं, तुम सब कुछ को जीत गये
इस शरीर संबंधी दोषों की खोज क्यों ?

नित्य प्रति इच्छा पूर्ति के लिये तुम्हारा नाम स्मरण पर्याप्त है
मुझे पवित्र करने के लिये तेरा तीर्थ पर्याप्त है
घोर पापों के शमन के लिये तेरा प्रसाद पर्याप्त है
इन उपायों से भी श्रेष्ठतर उपाय अब आवश्यक नहीं है
।।केशव।।

मुझे भला बनाने के लिये तुम्हारा कैंकर्य पर्याप्त है
मुझे तेज बनाने, रक्षा करने के लिये तुम्हारा मंत्र पर्याप्त है

मनोव्यथा दूर करने के लिये तिरुमणि का नैकट्य पर्याप्त है
उद्धार के लिये कोई दूसरी दिशा क्यों ढूँढ़ना है ।।केशव।।

अद्वितीय सुख के लिये तेरा ध्यान ही पर्याप्त है
यहाँ रक्षा और आश्रय के लिये तुम्हारी अर्चना पर्याप्त है
इस भू पर श्रीवेङ्कटेश्वर ! सभी में तुम व्यक्त हो
इसे छोड़ इतर में क्या ही ढूँढ़ना है ।।केशव।।

''ओम् नमो वेङ्कटेशाय''

*** * ***